अभी न होगा मेरा अंत...

स्मारिका

प्रो0 (डॉ0) एस0 पी0 तिवारी

(1 अक्टूबर 1959–27 जनवरी 2017)

सम्पादन :

डॉ0 मंजुला उपाध्याय

हेमन्त उपाध्याय

पवन उपाध्याय

अनुक्रमणिका

1.	डॉ0 मंजुला उपाध्याय (सम्पादकीय)	-	6-7
2.	प्रो0 ए0पी0 तिवारी	,-	8-9
3.	श्रेया	-	9
4.	प्रो0 वेद प्रकाश त्रिपाठी		10-12
5.	जे0पी0 तिवारी		12
6.	निमिषा उपमन्यु		13
7.	शैलजा मिश्रा		14
8.	डा0 डी0पी0 ओझा		15-17
9.	कुलवीर सिंह चौहान		17
10.	डा0 एस0पी0 त्रिपाठी		18
11.	वत्सला		18
12.	डा0 प्रिया कुमारी		18
13.	डा0 घनश्याम द्विवेदी		19-20
14.	डा0 नरेन्द्र शंकर एवं डा0 प्रमिला पाण्डेय		21-22
15.	ड0 दिनेश सिंह		22
16.	गौरव मिश्रा		23
17.	प्रियम त्रिपाठी		24
18.	डॉ0 वंदिता पाण्डेय		24
19.	डॉ0 तृप्ति त्रिपाठी		25
20.	विदुला शुक्ला		26
21.	निलय तिवारी		27
22.	अनुजेन्द्र तिवारी 'अनुज'		28
23.	नोमेश कुमार पाण्डेय		28
24.	प्रीति त्रिपाठी शुक्ला		29
25.	मधुकर त्रिपाठी		29
26.	डा0 बृजेन्द्र पाण्डेय		30
27.	डा0 अमितेन्द्र सिंह		30
28.	राजदीप सिंह		31
29.	पवन उपाध्याय		32-33
30.	डा0 भारती पाण्डेय		34
31.	प्रो0 जसवन्त सिंह		35
32.	डा0 अवधेश कुमार शुक्ला		35
33.	उत्कर्ष मिश्रा		35
34.	प्रो0 बी0बी0 तिवारी		36
35	प्रो0 अरूण प्रभा चौधरी		36

डॉ. के. एम. पाण्डेय
एम. ए. पीएच. डी.
पूर्व प्राचार्य

संजय गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चौकिया, सुलतानपुर (उ.प्र.)
(1982 में स्थापित अनुदानित महाविद्यालय)
फोन : कार्यालय- 05364-257508
आवास- 05364- 291658
मो.- 9415879289

पत्रांक.....

दिनांक 11.01.2018

यशः शेष अर्थशास्त्र के पुरोधा को प्रथम पुष्णतिथि पर श्रद्धांजलि

देहिनोऽस्मिनयथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति।।

गीता 2/13

जिस प्रकार जीवात्मा की इस शरीर में वालपन, यौवन और वृद्धावस्था होती है, वैसे ही मृत्यु के उपरान्त अन्य शरीर की प्राप्ति होती है। अतः उस विषय में धीर पुरूष मोहित नहीं होता ।

यशः शेष प्रोफेसर एस0 पी0 त्रिपाठी को उनकी प्रथम पुष्यतिथि पर शत शत नमन। श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी यादें पुनः ताजा हो गयी। प्रोफेसर त्रिपाठी से मेरा परिचय डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद में ग्रामीण अर्थशास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर आने के समय से ही था। किन्तु यह सम्बन्ध निलय और आभा की शादी के बाद अत्यन्त प्रगाढ़ हो गया । यह वैवाहिक सम्बन्ध उनके सकिय सत्प्रयासो का ही प्रतिफल था। मैने अपने महाविद्यालय में एक व्याख्यान देने का आग्रह किया जिसे उन्होंने सहज ही स्वीकार कर लिया। दिनांक् 15.02.2016 को उन्होनें कृषि एवं ग्रामीण विकास विषय पर अपना विद्वत् व्याख्यान महाविद्यालय सभागार में प्रस्तुत किया। अर्थशास्त्र के गूढ़ विषय को जिस सहज और सरल शैली में प्रस्तुत किया वह अविस्मरणीय है। उनका सदैव मुस्कराता हुआ चेहरा आज भी हमें प्रेरणा देता है। अन्याय के विरूद्ध वे हमेशा संघर्षशील रहे। जमीन से जुड़े होने के नाते वे समाजिक सरोकारों में भी अग्रणी थे। विश्वविद्यालय परिसर मे 24.01.2017 को मेरी अन्तिम मुलाकात थी। कुलपति कार्यालय के बाहर एक घन्टे की वार्ता को मै कभी विस्मृत नहीं कर सकता। यद्यपि आज वे हमारे बीच नहीं है। क्रूरकाल ने उन्हें हमेशा के लिए हमसे छीन लिया किन्तु उनके सद्विचार हमें सदैव प्रेरित करते रहेंगे। वे भविष्य द्रष्टा थे और दूर की सोचते थे और उस सोच को हमेशा कियान्वित करने के लिए तत्पर रहते थे। उनका आकस्मिक महाप्रयाण एक अपूरणीय क्षति, है जिसको कभी पूरा नहीं किया जा सकता। स्मृतिशेष प्रोफेसर एस0 पी0 तिवारी पुरोधा अर्थशास्त्र के यशस्वी व्यक्तित्व को शत् शत् नमन। उनके प्रति मैं श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ एवं उन्हे विनम्र श्रद्धांजलि देता हूँ।

(डॉ0 के0 एम0 पाण्डेय)
प्राचार्य (सेवानिवृत्त)
संजय गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चौकिया, सुलतानपुर।

प्रो.(डॉ.) मदन मोहन गोयल
एम.फ़िल. (स्वर्ण पदक), पीएच. डी., पीजीडीजेएमसी (स्वर्ण पदक)
निदेशक
पूर्व प्रति कुलपति, वी.के.एस.यू. (राज्य विश्वविद्यालय) आरा, बिहार
महाविद्यालय पूर्व डीन और संकाय, सामाजिक विज्ञान, के.यू.के

Prof. (Dr.) Madan Mohan Goel
MPhil (Gold Medalist), PhD, PGDJMC (Gold Medalist)
DIRECTOR
Former Pro Vice-Chancellor, VKSU (State University) Ara, Bihar
Former Dean of Colleges & Faculty of Social Sciences, KUK

सत्यमेव जयते

राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान (आर.जी.एन.आई.वाई.डी.)
(संसदीय अधिनियम की सं. 35/2012 के तहत राष्ट्रीय महत्व का संस्थान)
युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय, भारत सरकार
पेन्नलूर, श्रीपेरुम्बुदूर - 602 105, तमिल नाडु

RAJIV GANDHI NATIONAL INSTITUTE OF YOUTH DEVELOPMENT (RGNIYD)
(Institution of National Importance by the Act of Parliament No. 35/2012)
Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of India
Pennalur, Sriperumbudur - 602 105, Tamil Nadu

Tributes to Late Professor S. P. Tiwari

January 01st, 2018

My dear Dr. Manjula Upadhyay Ji,

Hare Krishan

I am glad to learn that you have planned to publish 'Bhavanjali' in sweet memory of Professor S.P. Tiwari, Department of Economics, Dr. Ram Manohar Lohia Avadh University Faizabad who left us in grief on January 27, 2017. He was a close friend and associate in the Indian Economic Association and shared many pleasures and pains together. I recall my association with him with great fondness particularly three visits of the Department of Economics, Dr. RML Avadh University Faizabad.

We need to become good teachers if not the great teachers like him. A teacher is more than the messenger of knowledge for nurturing the maturity and character of the students. A teaching job is beyond the border of profession and vocation simply earning a livelihood to be carried out with a sense of mission. As responsible teachers, we need to understand, analyse, interpret and adopt the spirit of leadership in Bhagvad Gita and Anu-Gita to be motivated and motivators of the students. Spiritual enthusiasm is the need of the day to say no to the crimes of all kinds in India and elsewhere in the World.

I trust that the 'Bhavanjali' in sweet memory of Professor S.P. Tiwari will be an asset for the fraternity of teachers in general and economics teachers in particular.May God bless the departed soul with peace and strength to the bereaved family to bear the irreparable loss. However, as soul he will always be with us. Soul is immortal and death rate is zero. As physical body everybody is to die and death rate is 100 percent. Let us understand the reality.

mmohan

(Madan Mohan)

मोबाइल / Mobile : 9896362620 फ़ोन/ Phone : (O) 044-27162705 फैक्स / Fax : 044-27163227
ई.मेल / e-mail : mmgoel.rgniyd@gov.in, mmgoel2001@yahoo.co.in वेबसाइट / Website : www.rgniyd.gov.in

DEPARTMENT OF ECONOMICS AND RURAL DEVELOPMENT
Dr. RAM MANOHAR LOHIA AVADH UNIVERSITY, FAIZABAD(U.P.)
Dr. Vinod Kumar Srivastava
Associate Professor and Head
E- mail:vksb621@yahoo.com
Mob. No. 09415382891

लोक अर्थशास्त्र के प्रेरणा थे प्रो0 तिवारी

प्रो0 शारदा प्रसाद तिवारी अर्थशास्त्र एंव ग्रामीण विकास विभाग में लोक अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ विद्वत जन के रूप में जाने जाते थे। विभाग में प्रो0 तिवारी ने वर्ष 1992 में रीडर के रूप में अपनी सेवाओं के साथ कार्यभार ग्रहण किया। कार्यभार ग्रहण से लेकर वर्ष 2017 तक। प्रो0 तिवारी ने लोक अर्थशास्त्र राजस्व कृषि अर्थशास्त्र, ग्रामीण अर्थशास्त्र एंव अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र से सम्बन्धित समय के सापेक्षिक तथ्यों एंव आवश्यक विषय की प्रासांगिकता पर अपने दृष्टिकोणों के द्वारा विभागीय छात्र–छात्राओं को लाभान्वति करते रहे। प्रो0 तिवारी के सहयोग से विश्वविद्यालय में ऋषभदेव जैन शोध पीठ, अम्बेडकर चेयर, समाजकार्य विभाग आदि की स्थापना सहज रूप में हो सकी। इस क्रम में प्रो0 तिवारी की संस्थानिक विकास की सोच परिलक्षित हुई। वर्ष 2013 में प्रो0 तिवारी के अपने नेतृत्व में विभागीय सदस्यों के सहयोग से उत्तर प्रदेश–उत्तराखण्ड आर्थिक संघ की 9वीं0 वार्षिक राष्ट्रीय आर्थिक अधिवेशन का आयोजन किया गया जिसमें पूरे देश से लगभग 650 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। हमारे विश्वविद्यालय के इतिहास में विभाग द्वारा आयोजित यह एक बडा अधिवेशन रहा।

प्रो0 तिवारी के प्रेरणा से ही वर्ष 2013 में अवध इकोनोमिक एशोसिएसन फैजाबाद का गठन किया गया, जिसका प्रमुख उद्देश्य उ0प्र0 के इस पिछडे क्षेत्र में शोध सम्बन्धित अध्ययन एंव अध्यापन की प्रवृत्ति को विकसित करना रहा। प्रो0 तिवारी ने अपने शैक्षणिक जीवन में विभिन्न आर्थिक एंव सामाजिक बिन्दुओं पर, अधिवेशन, संगोष्ठी, सेमिनार एंव विभिन्न विशेषज्ञों के व्याख्यान का आयोजन करवाया। अर्थशास्त्र एंव ग्रामीण विकास विभाग प्रो0 तिवारी की उक्त सेवाओं के लिए निरन्तर से ही अविभूति रहा है और उन्हे अपनी ओर से उक्त शब्दों के माध्यम से श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए अपनी भावान्जलि अर्पित कर रहा है।

(विनोद कुमार श्रीवास्तव)

अभी न होगा मेरा अन्त

❐ डॉ० मंजुला उपाध्याय

कुछ लोग पद प्रतिष्ठा से इतर अपनी व्यापक सोच, वात्सल्य प्रेम, समेकित दृष्टि से दीर्घकाल तक लोगों के मस्तिष्क में मधुर स्मरण की तरह सदैव जीवित रहते हैं। उनका असमायिक इहलोक से परलोक जाना सदैव खलता है। उन्हीं में से एक व्यक्तित्व मैं प्रोफेसर शारदा प्रसाद तिवारी को मानती हूँ। निष्ठुर काल उनकी स्मृतियों पर राख न जमा पाये और उनके जैसे सरल, सुलभ, प्रेमीजीव, जमीन से जुड़े इंसान और सबके उत्थान का व्यापक दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति को लोग याद रखें। इसी सोच से हमने ''प्रो0 शारदा प्रसाद तिवारी मेमोरियल ट्रस्ट'' की स्थापना की। जिससे उनसे जुड़े लोग अपनी योग्यता और सामर्थ्य अनुसार विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से उन्हें पुनर्दीप्त रख आगे आने वाली पीढ़ी का मार्गदर्शन करें और असहाय लोगों की मदद कर उनका सहारा बनें। जिस उत्साह के साथ लोग उनके जीवित रहते हुए जुड़े थे, आगे भी उसी उत्साह के साथ, उनके जाने के बाद भी उनकी तरह लोगों के लिए उपलब्ध रहें। उनके कुछ अधूरे सपनों को भी हम लोग यदि पूरा करने का प्रयास करें, वही उनके प्रति सच्ची 'भावांजलि' होगी।

घर की बड़ी सन्तान और फिर अर्थशास्त्र में करियर बनाने की वजह से शायद उनकी मुझ पर कुछ अलग स्नेह, वैचारिक निकटता, संवाद और सबसे बड़ी बात विश्वास रहा। उन्हें हमेशा लगता था कि परिस्थिति जन्य मैं जितना कर सकती थी नहीं कर पाती हूँ फिर भी हमेशा प्रोत्साहित करते। जनवरी 2017 आखिरी मुलाकातों की अमिट छाप है, सबसे ज्यादा खलता है उनका यह कहना कि ''मैं हूँ ना'' क्या पता था कुछ दिनों बाद ही वो नहीं रहेंगे। 7 जनवरी 2017 को आपने वादा किया था कि महीने भर के अन्दर आप हम लोगों को कोई खुशखबरी दोगे। 20वें दिन ही धोखा दे दिया काल ने और ऐसा तूफान आया जिसकी क्षति की पूर्ति कभी न होगी।

मानस पटल पर आपकी यादों का वृत्तचित्र विचलित कर देता है जब भी यह अहसास होता है आप नहीं हो। इस गणितज्ञ संसार में शून्य सी हो जाती हूँ जहाँ भावनाओं का मोल समझने वाले ढूँढे नहीं मिलते। पर आपके लिए यही भावांजलि है कि जैसे आपने पद–प्रतिष्ठा का कभी अभिमान न किया और एक जादुई छड़ी बन सबके संकटों को दूर कर सबके कार्यों को पूर्णता तक पहुंचाया। मैं 'प्रो0 शारदा प्रसाद तिवारी मेमोरियल ट्रस्ट' को आजीवन आपको समर्पित कर विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से आपको जीवन्त रख सकूँ। आप 'नाथ फाउन्डेशन' बनाना चाहते थे पर अपनी व्यस्तता के कारण एकाग्रचित्त हो उस दिशा में काम न कर पाये। आपको ईश्वर ने न जाने क्यूँ असमय अचानक हमसे छीन लिया। पर मैंने उसी समय प्रण कर लिया था कि अब आपके नाम को जीवित रखना है और आपकी प्रेरणा और कृपा से 28 दिसम्बर 2017 को आपके सपने को पूरा करने की कोशिश की।

लोग या तो व्यावसायिक क्षेत्र में, समाज में बहुत सफल होते हैं या परिवार में अपने प्रेम, योगदान, जिम्मेदारी, सम्बन्धों का निर्वहन कर पाते हैं पर चाचा सभी जगह संतुलन बनाने की कोशिश करते थे। शायद इसीलिए माई उनको सरदार कहती थीं। छोटे

होते हुए भी बड़ी–बड़ी जिम्मेदारियाँ निभाने वाले। गाँव से जुड़े रहते, रिश्तेदारी में सबका ख्याल रखते और कोई भी शख्स परेशान दिखता तो उसकी मदद को तत्पर रहते। इसलिए उनके घर में हमेशा कोई न कोई रहता। आज के समय में जब सब एकाकी जीना चाहते हैं ऐसे में उनकी जैसी सोच बिरली ही है। इसका कारण था कि अगर कोई काम वो हाथ में लेते तो उसे पूर्णता तक पहुँचाना उनका शौक था। आपको इतना व्यस्त देख हम लोग आराम करने और अपना ख्याल रखने की सलाह देते पर आप बस मुस्कुरा देते। जितना आपको मीठा प्रिय था उतना ही मधुर आपका व्यक्तित्व भी। पता होता आप को इतनी जल्दी खो देंगे तो जी भर कर मिठाई खिलाते। सबकी उपलब्धियों पर बहुत खुश होते इसलिए अब सब फीका सा रहता है।

उनके सम्बन्धों को सहेज पाना किसी के बस की बात नहीं। क्योंकि सम्बन्धों के बनने में कई कारण होते हैं और उनकी गैरमौजूदगी उसकी शायद तुष्टि न करती हो। किन्तु इस संस्था के माध्यम से जो लोग उनसे जुड़े रहना चाहते हैं उनके लिए यह प्रयास किया गया है। आपकी तरह सम्बन्धों का निर्वहन शायद न कर पाऊँ फिर भी इस संस्था के माध्यम से सम्बन्धों को एक साथ पिरो कर रखने की कोशिश तो कर ही सकती हूँ।

मैं विशेषतः आभारी हूँ श्री पवन कुमार उपाध्याय और हेमन्त कुमार उपाध्याय जी का, जिन्होंने मेरे इस प्रयास और मंशा को यथार्थता प्रदान करने में पूर्ण लगन से सहयोग किया। आशा करती हूँ कि आप सभी का प्रेम और आशीर्वाद इस संस्था के माध्यम से प्रो0 शारदा प्रसाद तिवारी को अविस्मरणीय बना देगा। ईश्वर अपनी कृपा से इसके उद्देश्यों को पुष्ट करें। चाचा का प्रिय भजन जो उनकी हमेशा कॉलर–ट्यून भी रही ''जिसकी लागी रे लगन भगवान में, उसका दिया भी जलेगा तूफान में'' उनकी यादों के इस दिये को हम न बुझने देने का संकल्प लें।

सरलता, सुलभता, मधुरता
जिसका पयार्य हो,
जिसे देख
न थकने न रुकने का साहस हो।
राह न मानी जिसने कभी कठिन,
हर ठोकर, हर काँटे को
धूल चटाने की ठानी।
उस अथक पथिक की गति का क्या मान,
जिसने जीवन की मुक्ति में भी,
न लिया किसी का एहसान।
मन मसोस बैठे हैं न जाने कितने,
उऋण होने का एक अवसर तो देते!
विशाल हृदय था जिसका,
वह हृदय ही न हुआ उसका।
बचपन से ही मुस्कुराता देखा जिसे,
27 जनवरी 2017 ने
पत्थर बना दिया उसे।
भावनाएं, प्रेम रिश्तों को
जो सहेजता रहा जीवन भर।
'मंजू' की भावांजलि
स्वीकार कर
सहर्ष, मार्गदर्शक बन
रहना जीवन भर। ❑

अर्थशास्त्र के देशज आचार्य का महाप्रयाण

❐ प्रो० (डा०) ए०पी० तिवारी

उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जनपद का एक छोटा गाँव है बलीतारा। यहीं पर 01 अक्टूबर, 1959 को जन्मे सहोदर भ्राता प्रोफेसर (डॉ.) शारदा प्रसाद तिवारी को काल के क्रूर हाथों ने 27 जनवरी, 2017 को हम सब से छीन लिया। वे तीन भाईयों में आयु में सबसे छोटे थे। सबसे पहले चले गये। अचानक हृदय गति रुक जाने से उनके निधन का समाचार हृदय विदारक था। लगा सब शून्य हो गया। एक ऐसी विपदा आई जो कभी भी भरी नहीं जा सकती। पिता स्वर्गीय भागवत प्रसाद तिवारी कृषक थे। वे उदारमना, विशाल हृदयी एवं गृहस्थ होते हुए संत स्वभाव के थे। माता स्वर्गीया नवरंगी तिवारी नितान्त धार्मिक व दया की प्रतिमूर्ति थीं। माता–पिता के सद्गुणों का अनुज पर सघन प्रभाव था। प्रो. तिवारी छुटपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि एवं तेजस्वी प्रकृति के थे। आरंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। हाईस्कूल तक की पढ़ाई राजकीय इण्टर कालेज, मायंग, सुलतानपुर से की। मधुसूदन इण्टर कालेज, सुलतानपुर से इण्टरमीडिएट किया। स्नातक एवं परास्नातक तक की पढ़ाई लखनऊ विश्वविद्यालय से की। यहां वे प्रातः स्मरणीय गुरुवर प्रो. शैलेन्द्र सिंह के सानिध्य में रहे। प्रो. सिंह उन्हें पुत्रवत् मानते थे। गिरी इस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेन्ट स्टडीज़, लखनऊ के सीनियर फेलो डॉ. आर.टी. तिवारी के निर्देशन में उन्होंने 'इकोनॉमिक रीज़नलाइजेशन ऑफ उत्तर प्रदेश' पर पी.एच.डी. की। उन्होंने अपने करियर का आरम्भ 1982 में लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में इनवेस्टिगेटर के पद से किया। मुख्यरूप में उन्होने लखनऊ विश्वविद्यालय, कानपुर विश्वविद्यालय एवं अवध विश्वविद्यालय में सेवाएं दीं। वे अवध विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग में वर्ष 2000 में प्रोफेसर बने। इसी विश्वविद्यालय में वह डीन, फैकल्टी ऑफ आर्ट्स भी रहे। प्रो. तिवारी ने विभिन्न अन्य प्रशासनिक दायित्वों का भी निर्वहन किया। उनमें विलक्षण प्रशासनिक कौशल था। वे विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता के प्रति पूर्णतया प्रतिबद्ध थे। उनके गम्भीर सामाजिक सरोकार थे। उन्होंने 'आध्यात्मिक अर्थशास्त्र' से लेकर 'ग्रामीण विकास की राजनीतिक अर्थव्यवस्था' जैसे दुरूह किन्तु महात्म वाले विषयों पर एक दर्जन शोधार्थियों के पी.एच.डी. कार्य का मार्गदर्शन किया। वे लोकोपयोगी शोध के पक्षधर थे। वे कई संगठनों से जुड़े रहे और पूर्णमनोयोग से उनके संवर्धन में योगदान दिया। इण्डियन इकोनॉमिक एसोसिएशन के वरिष्ठ आजीवन सदस्य रहे और मुझ समेत उससे कई लोगों को जोड़ा।

मुझसे आयु में लगभग 7 वर्ष छोटे थे। स्वाभाविक रूप में आरंभिक से उच्चशिक्षा तक मै उनका मार्गदर्शक व शिक्षक रहा। बहुत कुछ उन्हें पढ़ाई–लिखाई से सुसज्जित किया। मैंने पाया कि उनमें समझ की एक विलक्षण द्युति थी। उनमें अदम्य निर्भीकता थी। उनका धुर्धष व्यक्तित्व था। उनमें समस्याओं के समाधान की अद्भुत क्षमता थी।

परोपकार की भावना उनमें कूट–कूट कर भरी हुई थी। दूसरों के हितार्थ सदैव तत्पर एवं प्रयत्नशील रहते थे। उनकी आर्थिक विचारधारा भारतीय सामाजिकी, सांस्कृतिकी एवं परंपरा में रची–बसी थी। वस्तुतः वे विचार, व्यवहार एवं खान–पान में निरापदेन देशज थे। यह देशज दृष्टि उनको परिवार से विरासत में मिली। पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति की चकाचौध के वे धुर विरोधी थे। यही नहीं उनका मानना था कि सर्वोदय के रूप में विकास की भारतीय दृष्टि ही धारणीय हो सकती है; न कि पश्चिम की भौतिक प्रगति। वे अर्थ एवं आध्यात्म के मध्य सामंजस्य चाहते थे। गाँव, गरीब, जल, जमीन, जंगल एवं जानवर से उनका विशेष लगाव था। वे चाहते थे कि जैविक खेती और जल प्रबंधन गाँव के विकास का मूलाधार बने। खेती से वानिकी, पशुपालन एवं खाद्य प्रसंस्करण व पिद्दी औद्योगिक इकाईयों को जोड़कर गाँव से लोगों का पलायन रोका जा सकता है। उनकी दृष्टि सर्व समावेशी एवं अन्त्योदयी थी। दोनो नवरात्रि में पैतृक गाँव जाकर काली माई के देवोत्थान पर सामूहिक पूजन करवाते थे। दूसरों के लिये व्यस्त

रहना उनका स्वभाव था; स्वयं अपने लिये बहुत कम समय दे पाते थे। वे सच्चे अर्थ में कर्मयोगी थे। उनमें अक्षुण्ण भारत की प्रबल भावना थी। कुछ दिनों पहले पूर्वोत्तर के राज्यों के भ्रमण के बाद उन्होंने मुझसे हिमालयन रेंज से जुड़े विभिन्न पक्षों पर अध्ययन के बारे में विस्तार से चर्चा की और कहा कि इस पर कार्य आरम्भ कीजिये। प्रोफेसर (डॉ.) शारदा प्रसाद तिवारी अर्थशास्त्र के देशज आचार्य थे। उनके महाप्रयाण को शत–शत् नमन् करते हुए उनके प्रति अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। ❑

सम्प्रति : सलाहकार, डा0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ।

आप का मुस्कुराता चेहरा दिल में है पापा

❒ श्रेया

मेरे प्यारे पापा, आपको मुझको छोड़ने से पहले 15–20 मिनट पहले का वो पल जब मैंने आपके गले में हाथ रखा और गर्व से एक दूसरे को देखा उस पल का सुख–दुःख का मिश्रित अनुभव मै कह भी नहीं पाउंगी। मैं आपके गर्व को कम नहीं होने दूँगी पापा। वह 26 की शाम जब मैं एडमिशन के लिए परेशान थी तो आप ने कहा ''हम हैं बाबू, हम हैं बेटा''। आपकी बेटा बनकर दिखाऊँगी। जब मुझे कोई नहीं समझता था तो आप मुझे देखते और मैं शान्त हो जाती। आपका एक बार 'बाबू' कहना ही मेरे लिए सब कुछ था। उस 26 को आखिरी बार आप को तेल लगाया। उस पल सोचा था रोज लगाऊँगी पर अब वह तेल लगााना नहीं होगा। ठीक है, मैं मम्मी को लगाऊँगी। वो आपका रोज रात को दो बजे उठना, आज भी मेरी आँखे आपको एक दो बजे तलाश करती हैं। 18 से पहले तो मैं आपसे बात भी नहीं कर रही थी। उन दिनों की भरपाई नही हो सकती पर दुःख रहेगा हमेशा। मेरे आपसे दो दिन न बोलने पर आप स्कूटी ले आये, वो भी परेशान है। मेरे रूम में आकर आपने कहा था कि ''जहाँ जब जो चाहोगी सब मिलेगा'' पर अब इतना समझ चुकी हूँ कि मेरा अब कुछ नहीं, जो थे, जो जैसे भी हो, मेरे हो पापा। अब जो लोग कहेंगे वही होगा मेरे साथ। मैं बस इतना जानती हूँ पापा आप और मम्मी मेरे दो पैर थे, एक अब नहीं है पर जिन्दगी तो चलेगी। मम्मी और आपकी जगह जो मेरी हेल्प करेगा, अब वह ही मेरा है। आप हमेशा कहते थे ''मेहनत करो, रिजल्ट से मतलब नहीं है''। यादें बहुत हैं, बातें बहुत हैं। अब आपका मुस्कुराता चेहरा दिल में है पापा। आपकी **श्रेया।** ❑

प्रोफेसर तिवारी एक मित्र के रूप में दैवीय उपहार

❐ प्रो० वेद प्रकाश त्रिपाठी

उस दिन फरवरी 1, 2017 की सुबह भी एक सुहानी सुबह महसूस हो रही थी। मैं अपने विश्वविद्यालय के दीन दयाल उपाध्याय ग्राम्य विकास संस्थान के बाहर अपने साथियों के साथ उतरती सर्दियों की गुनगुनी धूप और चाय का आनन्द ले रहा था। मुझे महसूस हो रहा था कि कड़ाके की सर्दी अब दम तोड़ रही है और धूप में गर्माहट आ रही है। सर्दियों के विदाई की यह बेला मेरे लिए हमेशा ही राहत भरी होती है। किन्तु इस सुहानी बेला में मुझे यह किंचित भी आभास नहीं था कि उस वक्त तक कुछ ऐसा गुजर चुका था जो इस तेज सूरज की रोशनी के बावजूद मेरी आँखों के सामने स्याह अँधेरा करने जा ही रहा था।

मैंने अपने संस्थान के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी जितेन्द्र को चाय लेने भेज दिया था। किन्तु इससे पहले कि जितेन्द्र चाय लेकर आता वहाँ मेरे एक कनिष्ठ सहकर्मी डा0 मनोज राठौर का अचानक आगमन हो गया। दरअसल वह मुझसे यह कहकर गये थे कि वे उस दिन अपने घर जल्दी पहुँचना चाहते थे। अतः वे पहले ही प्रस्थान कर चुके थे। यही वजह थी कि उन्हें उल्टे संस्थान वापस आते देखकर मुझे थोड़ा अजीब लगा। प्रथमतः मैंने सोचा कि वे शायद संस्थान में अपना कोई सामान भूल गये होंगे और उसे ही लेने लौटे होंगे। लेकिन उन्हें संस्थान के प्रवेश द्वार के बजाय अपनी ओर आते देखकर हमें थोड़ा और अजीब लगा। लेकिन उस समय भी मुझे उनकी गम्भीर और गमगीन मुद्रा के बावजूद ऐसा महसूस नहीं हुआ कि वे एक ऐसा दुखद समाचार लेकर आ रहे हैं जिसे सुनकर हम सब स्तब्ध रह जाने वाले हैं।

दरअसल वे आगे बढ़कर हमारे बीच अति करीब आये और उन्होंने बड़े ही गमगीन स्वर में मुझे सम्बोधित करते हुए कहा, ''सर बड़ी ही दुखद सूचना है, फैजाबाद वाले प्रोफेसर एस0पी0 तिवारी नहीं रहे।''

''अरे! क्या?'' सबके मुख से अकस्मात निकल पड़ा। सभी सुनकर एकदम आवाक रह गये। एकदम समझ ही नहीं सके कि क्या हो गया, और पुनः लगभग एक साथ बोल उठे, ''क्या कह रहे हो? ... क्या तिवारी जी नहीं रहे? ... किसने कहा? ... खबर क्या पक्की है? ... जरा पक्का पता करो ... ऐसा कैसे हो सकता है? ...''

काश खबर गलत होती! किन्तु ऐसा नहीं था। शीघ्र ही एक के बाद एक फोन अलग–अलग, पास और दूर–दराज जगहों, खासतौर से विश्वविद्यालयों से आने लगे। कुछ यही दुखद समाचार देने हेतु थे तो कई इस समाचार की पुष्टि के लिए। इन तमाम फोन–संदेशों के बाद अब यह स्पष्ट था कि ईश्वर ने तिवारी जी को असमय ही अपने पास बुला लिया था।

मैं और मेरे सभी सहकर्मी–साथी अवाक् थे और बेहद दुखी। उन्हें सहसा विश्वास ही नहीं हो रहा था कि तिवारी जी को ईश्वर ने इतनी जल्दी हमारे बीच से उठा लिया है। संस्थान के सभी संगी–साथी उनसे भली–प्रकार से परिचित थे। मेरे संस्थान की वे रिसर्च डिग्री कमेटी (RDC) के सम्मानित सदस्य थे तथा इस रूप में और तमाम एम0फिल0 और पी–एच0डी0 परीक्षाओं में भी वाइवा आदि के लिए आते रहे थे। वे बेहद मिलनसार और हँसमुख थे। यही वजह थी कि संस्थान के केवल शिक्षक साथी ही नहीं बल्कि गैर–शैक्षिणिक सहकर्मी भी उनसे भली प्रकार परिचित थे और उनसे अपनत्व अनुभव करते थे। यही वजह थी यह खबर शीघ्र ही संस्थान के सभी कर्मचारियों के बीच फैल गयी और सभी काम बन्द करके बाहर आ गये। तब तक चाय आ चुकी थी किन्तु शोकग्रस्त साथियों में से किसी ने चाय नहीं पी। सभी उठ गये और एक के बाद एक उनकी स्मृतियों की चर्चा करने लगे। सभी बार–बार एक ही बात पूछ रहे थे – आखिर यह अनहोनी कैसे हो गयी?

वैसे तो तिवारी जी का सम्पर्क सम्बन्ध संस्थान के सभी शिक्षकों–कर्मचारियों से था किन्तु मुझसे तो उनके सम्बन्ध बेहद ही घनिष्ठ और आत्मीय थे। हमारे गहरे सम्बन्ध तमाम औपचारिकताओं को लाँघ चुके थे और तकरीबन सभी संकोचों का अतिक्रमण

कर चुके थे। हम इतने निकट थे कि जब भी मौका होता वे मुझे फैजाबाद बुलाने और मैं उन्हें आगरा बुलाने से कभी नहीं चूकता था। कभी आसपास के जिलों यथा अलीगढ़, मथुरा, फिरोजाबाद में भी उनका कोई काम होता था तो वे पहले आगरा आते और फिर मुझे लेकर ही अलीगढ़, मथुरा या फिरोजाबाद जाते। रास्ते में दीन–दुनिया की तमाम बातें और गपशप होतीं थीं। किन्तु बीच–बीच में अकादमिक मुद्दों और बहसें भी छिड़ जातीं थीं। मतभेद बहुदा होते थे किन्तु मनभेद होने का तो सवाल ही नहीं होता था।

आगरा, फैजाबाद और लखनऊ वह स्थान थे जहाँ हम सर्वाधिक मिले होंगे। किन्तु तकरीबन हर साल हम एक स्थान पर हर वर्ष के अन्त में जरूर मिलते थे और वह था– इण्डियन इकॉनोमिक एसोसिएशन (IEA) की नेशनल कान्फ्रेंस। यहाँ हमारी हमेशा यही कोशिश होती थी कि एक साथ एक कमरे में रुकें या कम से कम आसपास के कमरों में रुकें। रात को हमारी महफिलें जुड़तीं, हँसी–मजाक होते और गाना–बजाना भी। हम दोनों ही एसोसिएशन के चुनाव में सक्रिय भूमिका निभाते और हम लोगों की बनाई चुनावी समरनीति ज्यादातर सफल भी होती थी। मुझे खूब ध्यान है कि जब जम्मू में इण्डियन इकॉनोमिक एसोसिएशन की कान्फ्रेंस थी तो हमने कितनी मेहनत से प्रो0 ए0डी0एन0 बाजपेई को विजयी बनाया था। मुझे खूब ध्यान है कि वे प्रत्येक चुनाव में जिसके लिए काम करते थे पूरी गम्भीरता और तन्मयता से करते थे। उन्हें स्वयं न तो कोई लालच था, न दिखावा और न अहसान जताने की भावना। ऐसे दोस्त आज सचमुच ही बहुत कम ही मिल पाते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि मित्रता और सम्बन्ध निभाने का जो माद्दा तिवारी जी में था, वह मुश्किल से ही किसी में मिलता था। मित्रता के लिए वे बहुत बार बहुत से कष्ट बड़ी खुशी–खुशी उठा लेते थे। मुझे आज भी ध्यान है कि एक बार एक विश्वविद्यालय में मेरे एक मित्र 'प्रोफेसर एमरिट्स' के लिए दावेदार थे। उनकी सेलेक्शन कमेटी होनी थी जिसमें मैं और दो अन्य एक्सपर्ट थे। किन्तु ठीक एक दिन पहले एक एक्सपर्ट ने आने से इनकार कर दिया। सेलेक्शन कमेटी खतरे में पड़ गयी। कोई अन्य प्रोफेसर इतने शीघ्र कैसे आता? मैंने तिवारी जी से आग्रह किया। वे एकदम तैयार हो गये। कोई रिजर्वेशन नहीं था, कोई सीधी ट्रेन भी नहीं। लेकिन वे मात्र एक घण्टे के नोटिस पर चल दिये। कहीं बिना रिजर्वेशन ट्रेन, कहीं बस, कहीं पुनः ट्रेन लेकर आखिर वे सही समय पहुँच ही गये और सेलेक्शन कमेटी भी हो गयी। हम सभी उनके इस साहस, सहयोग, आत्मीयता, जीवटता और दोस्ती निभाने का माद्दा देखकर दंग रह गये।

तिवारी जी जब भी आगरा आते थे तो मैं उनके रुकने की व्यवस्था यूनीवर्सिटी गेस्ट हाउस में करता तो जरूर था किन्तु वे शायद ही कभी वहाँ देर तक रुकते थे। वे अधिकांश समय मेरे घर ही बिताते थे। यही वजह थी कि वे मेरे घर में घर के एक सदस्य की तरह ही घुलमिल गये थे। आगरा से जब भी वे किसी भी दिशा में रवाना होते थे तो वे मेरी पत्नी के हाथ की पूड़ी–आलू सब्जी ले जाना ही पसन्द करते थे। वे सीधे, बड़ी सहजता और अनौपचारिकता के साथ मेरी पत्नी से कह भी देते थे, ''भाभी यात्रा लम्बी है रास्ते के लिए अपनी पूड़ी पैक जरूर कर दीजिए। मुझे वही पसन्द हैं।''

तिवारी जी जिस सहजता से मेरे घर आते और मेरे धर में घुल–मिल गये बिल्कुल वैसे ही मैं भी फैजाबाद में चाहे इंतजाम कहीं हो, उनके घर पर ही रुक जाता था। यही वजह थी जिस तरह वे मेरे परिवार में घुलमिल गये थे वैसे ही मैं भी उनके घर के एक सदस्य की तरह उनके घर में घुल मिल गया था। जब मैं उनके घर में रुकता तो सदैव ही देखता कि मेरे अलावा भी एकाधिक लोग उनके पास रुके हैं। वस्तुतः उनकी आत्मीयता के चलते उनसे अन्यत्र कहीं रहने की कहने की हिम्मत जुटाना भी मुश्किल था।

मैं जब भी उनके यहाँ रुकता तो देखता कि दिन भर उनके पास आने–जाने वालों का सिलसिला चलता रहता था। तमाम लोग आते, दिन भर चाय–पानी चलता रहता था। किन्तु क्या मजाल कि उनके या उनके घर के किसी भी सदस्य के माथे पर कोई शिकन हो। दरअसल उन्होंने अपने घर पर ऐसी संस्कृति विकसित की थी, सभी को ऐसे संस्कार दिये थे। यही बात थी कि उनके घर पर प्रत्येक का चाहे

वह किसी भी श्रेणी का व्यक्ति क्यों न हो, उसका सदैव गर्मजोशी के साथ स्वागत और सत्कार होता था। जहाँ सम्बन्ध मित्रता के होते, आत्मीयता के होते, वहाँ उन्हें श्रेणी–स्तर आदि जैसी चीजों से कोई लेना–देना नहीं होता था।

प्रोफेसर तिवारी एक कुशल संगठनकर्ता थे और उनमें नेतृत्व के गुण भी उच्च कोटि के थे। यह सम्भवतः किसी भी प्रतिभागी को विस्मृत न हुआ हो कि उन्होंने कितने अल्पसाधनों और कुछ नकारात्मक तत्वों की बदनजर के चलते भी उत्तर प्रदेश–उत्तराखण्ड आर्थिक परिषद का वार्षिक अधिवेशन आयोजित किया था। उन्होंने इस अधिवेशन का जिस कुशलता से आयोजन किया, वह निश्चित ही सभी प्रतिभागियों के लिए अविस्मरणीय बन गया। मुझे याद है कि समापन सत्र में तमाम प्रतिभागीय उन्हें मंच से बधाई, धन्यवाद और साधुवाद देने के लिए उतावले थे, किन्तु समय कम होने से केवल कुछ को ही अवसर मिल सका। लेकिन जब वे धन्यवाद का उत्तर देने खड़े हुए थे तो इतनी करतल ध्वनि हुई थी कि हॉल की दीवारें तक गुंजायमान हो गयीं थीं।

प्रोफेसर तिवारी के साथ स्मृतियों की श्रृंखला इतनी लम्बी है कि उनकी एक बार चर्चा हो तो यह सिलसिला रुकना बड़ा मुश्किल हो जाता है। मेरे साथ तो उनका संग और यादें इतनी हैं कि मैं यदि एक पुस्तक भी लिखूँ तो भी शायद उनकी तमाम यादों को समाहित न कर सकूँ। अतः सार में अब बस यही कहूँगा कि कई बार मन करता है कि यदि किसी को शुभकामनाएँ दूँ तो क्यों न कहूँ – ईश्वर किसी को मित्र ही दे तो प्रोफेसर शारदा प्रसाद तिवारी जैसा। शायद यही उनके लिए एक श्रेष्ठ श्रद्धांजलि भी है। ❑

सम्प्रति : दीन दयाल उपाध्याय, ग्राम्य विकास संस्थान, आगरा विश्वविद्यालय।

कर्तव्यनिष्ठ, उदार एवं कर्मयोगी अनुज शत्–शत् नमन

❑ **जगदम्बा प्रसाद तिवारी**

नैनं छिन्दन्ति शास्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयान्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

यह आत्मा अमर है, इसको न तो (कभी किसी शस्त्र द्वारा खण्ड–खण्ड किया जा सकता है, न अग्नि द्वारा जलाया जा सकता है, न जल द्वारा भिगोया या वायु द्वारा सुखाया जा सकता है।)

विलक्षण प्रतिभा एवं प्रशासनिक कौशल से सम्पन्न मेरे प्राणप्रिय अनुज तुम्हें काल के क्रूर हाथों ने आज से लगभग एक वर्ष पूर्व हम सब से छीन लिया। बालकाल से ही तीक्ष्ण बुद्धि एवं तेजस्वी प्रकृति से सम्पन्न प्रिय अनुज तुम्हारे द्वारा परिवार, परिजन, समाज एवं शिक्षा के क्षेत्र में किये गये कार्य प्रशंसनीय है।

मुझसे आयु में लगभग 14 वर्ष छोटे थे। मैंने तुम्हें अपनी गोदी में उठा कर स्नेह दिया, हाथ पकड़ कर चलना सिखाया। आरम्भिक शिक्षा प्राप्त कर स्नातक एवं परास्नातक शिक्षा अनुज प्रो0 डा0 ए.पी. तिवारी के मार्गदर्शन में प्राप्त किया। मेरे प्राणप्रिय स्वर्गीय अनुज प्रोफेसर (डा0) शारदा प्रसाद तिवारी की अर्थशास्त्र में गहरी रुचि थी, फलस्वरूप इस विषय में पी.एच.डी. की।

लखनऊ विश्वविद्यालय, कानपुर विश्वविद्यालय एवं अवध विश्वविद्यालय में सेवाएँ दीं। इसी विश्वविद्यालय में डीन फैकल्टी ऑफ आर्ट्स रहे। वे स्वभाव से ही उदार एवं सहयोग की भावना से परिपूर्ण थे। प्रशिक्षण के क्षेत्र में समभाव से दर्जनों शोधार्थियों के पी.एच.डी. कार्य का मार्ग–दर्शन किया। इण्डियन इकॉनोमिक एसोसिएशन के वरिष्ठ आजीवन सदस्य रहे।

परोपकार की भावना से परिपूर्ण दूसरों के हित के लिए प्रयत्नशील रहते थे। इसके परिणामस्वरूप अपने लिए समय बहुत कम दे पाते थे। इस विषय में कोई सुझाव नहीं मानते थे, केवल मुस्करा देते थे। वे एक महान कर्मयोगी थे। उनके महाप्रयाण को शत्–शत् नमन करते हुए उनके प्रति अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। ❑

पापा के साथ आखिरी पल

❒ निमिषा उपमन्यु

रोज कुछ लिखने को सोचते हैं मगर ये नहीं पता कि क्या लिखें, अपने ही पापा के बारे में क्या लिखें एक भी दिन नहीं बीतता जो उनकी याद न दिलाये। हर एक चीज से जुड़े थे वो। देख के अच्छा लगता है कि दुनिया उनके व्यक्तित्व को सराहती है, उनकी बेटी हैं हम। कोई भी युनिवर्सिटी की न्यूज़ फेसबुक पर देखना मुझे व्यक्तिगत तौर पर अच्छा नहीं लगता क्योंकि वहाँ पापा को देखने की आदत थी जो अब नहीं दिखते तो खलता है, मगर ये दुनिया है जो चलेगी।

हर त्यौहार में उनके फोन का इंतजार रहता है कि शायद पापा फिर फोन करें और पूछें कि 'बिटिया का बनाई अहा' और मिठाई के बारे में पूछना, बहुत खलता है। बहुत नाराज थे उनसे, नीलाक्ष के पहले, जन्मदिन में नहीं आये थे। कई बार फोन किया था पापा ने मगर सब व्यस्त थे तो नीलाक्ष से उनकी बात नहीं करायी और वह वंचित रह गया अपने नाना के दुलार से। होते तो न जाने कितनी शैतानियाँ सिखाते, खेलते और न जाने क्या–क्या।

26 जनवरी 2017 को पापा, नीलाक्ष, मम्मी खूब खेले थे। तब पापा ने कहा था–''नीलाक्ष मिट्टी खेलना होगा तो नाना के पास आना और खाना–पीना होगा। तो नानी के पास जाना''। उस अबोध को क्या पता था कि नाना इतनी जल्दी मिट्टी में खो जायेंगे।

26 जनवरी को शाम को अपनी दोस्त के महिला संगीत में जाने के लिए जिद्द किया कि पापा अभी फैजाबाद में हूँ तो चली जाऊँ वरना कहाँ मौका मिलता है। वो मना कर रहे थे पर फिर चलने को तैयार हो गये। स्कूटी से रास्ते भर धीरे–धीरे जाते हुए जब वहाँ पहुँचे तो बोले ''स्कूटी से आये हैं किनारे खड़ा करते हैं वरना सब मजाक उडायेंगे। कुछ मीठा पापा के लिए भी ले आना'' ऐसा कह कर चले गये। हम मूँग की दाल का हलवा लाये थे। रात में खाते हुए बोले ''हलुआ अच्छा नहीं है, मम्मी ज्यादा अच्छा बनाती हैं'' फिर बेड पर लेट कर श्रेया से मालिश कराते हुए बोले, ''अब बहुत थक गये हैं भाग दौड़ के, अब भागदौड़ नहीं करेंगे, जो भी मिलेगा सुकून से खायेंगे आराम से रहेंगे।'' रात में 1:30 बजे उठे और मिठाई खाने लगे तो हमने बोला, ''लड्डू हमारे लिए भी छोड़ देना पापा'' और वो शायद पहली और आखिरी बार था, उन्होंने मिठाई छोड़ी होगी।

उस दिन सुबह जब उठी तो पापा सामने ही खड़े थे और हमें और नीलाक्ष को देख रहे थे। मम्मी किचेन में थीं, श्रेया और दिव्य स्कूल के लिए तैयार हो रहे थे। पापा बोले, ''आज हम रात भर सो नहीं पाये, बहुत घबराहट थी और एक हाथ में झनझनाहट।'' हमने तोंद छूकर बोला ''और खाओ मीठा, जब मना करो तो मानते नहीं। बारिश हो रही है रुक जाये तो दिखाने चलते हैं''। फिर पापा नीलाक्ष को गोद में लेकर बारिश दिखाने ले गये, फिर बेड में उसे लिटा कर चाय पीकर बाथरूम चले गये और वहीं उन्हें अटैक आया ... उसके बाद उसी आधे घण्टे में सब कुछ हो गया। किसी तरह उन्हें बाथरूम से बाहर लाये तो उनकी सांसे रुक गई थीं। दिव्य और हमने मिलकर चेस्ट पर दबाया तो फिर चलने लगीं। तब तक बगल वाले अंकल और नर्सिंग होम से लोग भी आ गये थे, वहीं बाहर बरामदे में पापा की आँख से दो आँसू निकले और वही उनकी आखिरी सांस थी। पापा को गोद में लिये नर्सिंग होम से डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल गये। सब कुछ वैसा ही था पर पूरा शरीर ठण्डा पड़ गया था। बाल तक ठण्डे हो गये थे। मृत घोषित किये जाने के बाद जब उन्हें घर वापस लाई तो कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि श्रेया और मम्मी से क्या कहूँ। पर उन्हीं की शिक्षा थी जो हिम्मत बनी और मैं सबका सामना कर पाई और उसके बाद जो कुछ भी हुआ, उसे शब्दों में लिखना आसान नहीं।

जो कुछ हुआ उसको बदलना नामुमकिन है। अब चाहे कोई इसको अंधविश्वास कहे या पागलपन, पर जब भी पापा से मिलने की बहुत इच्छा होती है तब वो सपने में आकर मिलते हैं और कुछ ऐसा करते हैं जिससे एहसास होता है कि वे आसपास हैं, जीने के लिए इतना काफी है ..... ❑

तालीम जिन्दा है मगर आपके जाने के बाद

❒ शैलजा मिश्रा

मामा ... आपके लिए जो मैं महसूस कर रही हूँ, उसे शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना बहुत मुश्किल है। फिर भी कुछ बातें जो मैं कहना चाहती हूँ। 27 जनवरी 2018 को आपको गये पूरा एक साल हो जाएगा। इस दौरान कई ऐसे पल आए जब आपकी कमी महसूस हुई मगर ज़्यादातर समय यही लगता रहा कि आप अभी भी हमारे पास हैं। आपका मुस्कुराता हुआ चेहरा, आपकी बच्चों जैसी हँसी, आपकी कहावतें, शरारतें और मिठाई के लिए आपका प्रेम याद करके हँसी भी आती है और रोना भी। आपका और माँ का स्वभाव एक जैसा था। आप दोनों के बिना रक्षाबंधन का त्यौहार बहुत सूना लगता है। फिर कभी वो रक्षाबंधन नहीं आएगा। वो भी कितने अच्छे दिन थे। अब जिम्मेदारियाँ बढ़ गई हैं और आप नहीं हैं। चाहे सुख हो या दुःख, माँ सबसे पहले आपको ही बताती थीं। उनके जाने के बाद आपने और मामी ने हम सब को हर तरह से संभाला। अब आपके जाने के बाद कोई ऐसा नहीं है जिससे अपनी दिक्कतें साझा कर सकें। आप पर विश्वास था कि आप हर समस्या का हल ढूँढ लेंगे। आपके जाने के बाद आपकी कही हुई एक बात बहुत याद आती है कि ''ऐसी कौन सी समस्या है जिसका हल नहीं है।'' आपकी यही बात याद करके हर मुश्किल को सुलझाने की कोशिश करती हूँ। 9 जनवरी 2017 को माँ की पुण्यतिथि पर आप हमसे मिलने आये, आपको सब याद था। कितनी बातें कीं आपने उस दिन। शिवांगी को समझाया, दिव्य को समझाया। हमें बिल्कुल नहीं पता था कि यह आपसे आखिरी मुलाकात है। अभी भी लगता है कि जैसे कल की बात हो, जब दिव्य ने मुझे बताया कि आप नहीं रहे। एक बुरे सपने की तरह लगता है यह सब। किसी के जाने से जिन्दगी नहीं रुकती लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी कमी हमेशा खलती है, जिनकी जगह और कोई नहीं ले सकता। माँ, आप और बाबा ऐसे ही कुछ लोग थे जो हमेशा मुझे अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करते रहे। आप तीनों की जगह और कोई नहीं ले सकता। आज के जमाने में जब सब केवल अपने बारे में सोचते हैं तब आप परिवार को साथ लेकर चले। अपनी जड़ों को मजबूत किया। ऊँचा पद पाकर भी हमेशा जमीन से जुड़े रहे। बहुत ज़िम्मेदारियाँ थीं आप पर और आपने अच्छी तरह से उन्हें निभाया। मेरा सौभाग्य है कि मेरे जीवन में आप जैसे लोग थे। मेरी हमेशा कोशिश रहेगी कि माँ और आपका अनुसरण करूँ। शरीर मरता है मगर आत्मा सदैव रहती है। आप सामने नहीं हैं फिर भी सूक्ष्म रूप में आप अब भी हमारे साथ हैं। आपका व्यक्तित्व हमेशा हमें प्रेरणा देता रहेगा।

आवाज़ खामोश और मिलते नहीं अब रूबरू
तालीम ज़िन्दा है मगर आपके जाने के बाद। ❒

सम्प्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र, अवध गर्ल्स डिग्री कॉलेज, लखनऊ।

स्मृतियों के घेरे में'

❐ डा० डी०पी० ओझा

''भाई मैं तो चार बेटियों का बाप हूँ, उस हिसाब से रुपया-पैसा भी नहीं है, कहाँ जाकर खड़ा होऊँगा। किससे क्या कहूँगा।'' वहाँ संयोंगात् मैं भी था- यद्यपि मेरा वैसा कुछ याराना उनसे नहीं था, लेकिन मैने उनसे कहा-''मेरा बेटा तो अभी बहुत छोटा है, वह RIMC (राष्ट्रीय इण्डियन मिलेट्री कॉलेज) देहरादून में पढ़ रहा है, मैं और तो अपनी ओर से कुछ नहीं कह सकता, किन्तु जब भी उसकी शादी करने का उचित समय आयेगा, शादी होनी होगी और आपका मन होगा, आप चाहेंगे तो मैं आपको बताऊँगा, आगे प्रभु-इच्छा।''

प्रो० एस०पी० तिवारी जी को विनम्र श्रद्धांजलि! आज उनके सम्बन्ध में कुछ लिखते हुए बहुत–सी बातें याद आयीं यह भी कि किसी के न रहने पर उसके अपनेपन, उसकी आवश्यकता, उसके प्रेमभाव, उसके मूल्य–महत्व का अभिज्ञान होता है– पता चलता है।

27 जनवरी, 2017 का वह मनहूस, आवांछित एवं दुःखद दिन, सम्भवतः आठ–साढ़े आठ बजे के आसपास मेरे छोटे बेटे पुलिन (प्रो० एस०पी० तिवारी जी के दामाद) का 'पठानकोठ' से फोन आया – सामान्यतः सबेरे उसका कभी फोन नहीं आता – मैंने फोन उठाया तो उधर से बड़ी व्यथित और घबरायी हुई आवाज आयी– 'पापा बहुत गड़बड़ हो गया, तिवारी जी को – मुनमुन के पापा को– तेज हार्ट अटैक हुआ है। मै इतनी जल्दी पहुँच नहीं सकता, संभव हो तो आप जाइए।' मैंने कहा कि मैं तुरन्त तैयार हो रहा हूँ, पता करके बताओ कि कहाँ, किस अस्पताल में है। मैं तैयार होने लगा और उसके फोन की प्रतीक्षा करने लगा। करीब 15 मिनट बाद फिर फोन आया – बहुत परेशान, बहुत दुःखी आवाज में– 'पापा, सब खत्म हो गया, वे नहीं रहे।' सुनकर मैं आवाक, सन्न, कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था।

मैं करीब एक बजे फैजाबाद उनके आवार पर पहुँचा। बड़ी भीड़ थी, किन्तु बेहदशान्त, उदास.... बहुत से नामते–रिश्तेदार, मित्र–हितैषी, शुभचिन्तक– सहयोगी इधर–उधर खड़े हुए बैठे हुए – सबके सब व्यथित, आश्चर्यचकित–अचम्भित के ये क्या हो गया, अभी कल 26 जनवरी को तो अपने स्वाभावनुसार सबसे हँसी–मजाक कर रहे थे, बिल्कुल ठीक–स्वस्थ थे। मैं उनके पास चला गया, पहली बार मुझे तिवारी जी निश्चेष्ट, कार्यविमुख, परमशान्त चिरनिंद्रा में विलीन लेटे हुए मिले– लग रहा था कि सो रहे हैं। कोई बातचीत नहीं, कोई हाल–चाल नहीं, कोई आगत–स्वागत नहीं। (आज भी याद करके, एक साल बाद, आँखों में आँसू आ रहे हैं) उनकी बेटियाँ, पत्नी, सभी भाई–बहिन–सब विह्वल, फूट–फूट कर रोते–बिलखते हुए, बड़ा कारुणिक एवं हृदय विदारक दृश्य था। कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था कि किससे क्या पूँछू, क्या कहूँ। वही एक कुर्सी पर बैठ गया।

एक–एक कर पुरानी बातें याद आने लगीं। सन् 2000 के आस–पास की बात होगी, जब पहली बार मैं डॉ0 तिवारी जी से फैजाबाद उनके आवास पर मिलने आया था– मिलने क्या आया था, अपने लोभ–लाभ के वशीभूत काम से आया था। उन दिनों उत्तर प्रदेश के बहुतेरे विश्वविद्यालयों में परीक्षाओं में मूल्यांकन की विधि थोड़ी बदली हुई थी। मूल्यांकन–कार्य यथासमय समाप्त हो जाय तथा परीक्षाफल यथाशीघ्र घोषित हो जाय, इसके लिए विश्वविद्यालयों ने बहुत–सी जगहों पर अपने–अपने 'नोडल सेन्टर– बनाकर 'कन्वीनर' बना दिये थे। विश्वविद्यालय से लिखित उत्तर पुस्तिकाओं के बण्डल ट्रक या ऐसी ही किसी व्यवस्था से 'कन्वीनर के पास भेजे जाते थे और 'कन्वीनर' अपनी सुविधा के प्रधानाध्यापक –परीक्षकों से उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कराता था, फिर

विश्वविद्यालय मूल्यांकित उत्तर–पुस्तिकाएँ तथा अंकपत्र अपने माध्यम से वापस मँगा लेता था। बाद में विश्वविद्यायल सम्बन्धित 'कन्वीनर' के माध्यम से मूल्यांकन की पारिश्रमिक राशि परीक्षकों को उपलब्ध करा देता था। स्पष्ट है कि इस काम में 'कन्वीनर' का मूल्य और मान दोनों बढ़ना स्वाभाविक था। फैजाबाद में प्रो0 एस0पी0 तिवारी, प्रो0 एल0के0 सिंह (अवध विश्वद्यिालय, फैजाबाद), डॉ0 एस0पी0सिंह, डा0 पी0एन0 पाण्डेय, डॉ0 संग्राम सिंह (लखनऊ), डॉ0 के0पी0तिवारी, डॉ0 पी0सी0 श्रीवास्तव (इलाहाबाद) ऐसे ही बहुचर्चित नामधारी 'कन्वीनर' थे, जो उन दिनों कई–कई वर्षों से आगरा, मेरठ, झाँसी, गढ़वाल, कुमायूँ, कानपुर, पूर्वांचल (जौनपुर), गोरखपुर आदि विश्वविद्यालयों की परीक्षाओं का मूल्यांकन–कार्य सम्पन्न करा रहे थे। उन दिनों ये सब बड़े नाम और काम वाले थे तथा लखनऊ, इलाहाबाद, गोरखपुर, फैजाबाद के बिचपटे के सभी जनपदों के बहुतेरे प्राध्यापकगण इन्हें जानते थे और इन सबसे अपनी पहुँच–पकड़ के हिसाब से जुड़े रहना चाहते थे। इनमें भी प्रो0एस0पी0 तिवारी तथा प्रो0 जे0एन0 मिश्र, प्रो0 राजगुरू मिश्र– जैसे कुछ तो एक साथ ही एकाधिक विश्वविद्यालयों के 'कन्वीनर' हुआ करते थे।

उन्हीं दिनों पता चला कि प्रो0एस0पी0 तिवारी जी के पास इस समय रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली की कापियाँ मूल्यांकन के लिए आयी हैं और मैं भी उनसे कापी पाने हेतु ही आया था। उनसे पहले से कोई जान–पहचान नहीं, कोई माध्यम नहीं, मन में यह भी आता था कि वे कापियाँ देते हैं या नहीं ....। उन्होंने मेरा नाम, कॉलेज का नाम विषय आदि पूछा और कुछ आवश्यक निर्देश देते हुए उत्तरपुस्तिकाओं का एक बण्डल मुझे दे दिया है। मैंने निर्धारित समय में कार्य पूरा करके उत्तरपुस्तिकाएं उन्हें वापस कर दीं। यही मेरी उनसे पहली मुलाकाल और जान–पहचान थी। फिर तो मेरा धीरे–धीरे आना–जाना बढ़ता गया और परिवार में भी बच्चों से जान–पहचान हो गयी। मेरी सदैव से साफ–सुथरा काम करने की आदत रही है, समय का पाबन्द रहा हूँ और लोगों का एहसानमन्द रहा हूँ। यही कारण है कि जिससे जुड़ाव हुआ, वह आगे भी स्थायी बना रहा। इन स्थितियों के कारण प्रो00 तिवारी मेरा अतिरिक्त ध्यान रखते थे।

मुझे याद है कि उन्हीं दिनों अपने दो–चार लोगों के बीच बैठे हुए, बातचीत के क्रम में उन्होंने हँसी–मजाक में ही अपनी यह चिन्ता व्यक्त की किः ''भाई मैं तो चार बेटियों का बाप हूँ, उस हिसाब से रुपया–पैसा भी नहीं है, कहाँ जाकर खड़ा होऊँगा। किससे क्या कहूँगा।'' वहाँ संयोंगात् मैं भी था– यद्यपि मेरा वैसा कुछ याराना उनसे नहीं था, लेकिन मैने उनसे कहा– ''मेरा बेटा तो अभी बहुत छोटा है, वह RIMC (राष्ट्रीय इण्डियन मिलेट्री कॉलेज) देहरादून में पढ़ रहा है, मैं और तो अपनी ओर से कुछ नहीं कह सकता, किन्तु जब भी उसकी शादी करने का उचित समय आयेगा, शादी होनी होगी और आपका मन होगा, आप चाहेंगे तो मैं आपको बताऊँगा, आगे प्रभु–इच्छा।'' बात आयी गयी हो गयी। फिर सन् 2008 की अवध विश्वविद्यालय की परीक्षा में मूल्यांकन में संयोग से उनके साथ काम करने का अवसर मिला। वे मूल्यांकन–प्रभारी नियुक्त हुए थे और मैं उनके साथ सहायक प्रभारी था। साथ में और भी बहुत से सहायक–रूप में कार्य कर रहे थे– प्रो0 सन्तशरण मिश्र, डॉ0 लाल साहब सिंह, श्री मालवीय जी, सन्तोष, मौर्या जी आदि। उस लगभग दो महीने की कार्यावधि में प्रो0 तिवारी के नजदीक रहने का और उन्हें समझने का अवसर मिला। उनकी कुछ विशेषताएं रेखांकनीय दिखीं–

अपने से जुड़े हुए सभी लोगों का– वह चाहे समकक्षी प्रध्यापक रहे हों, चाहे स्टाफ– कर्मचारी या फिर चाहे सेवक, सबके प्रति उनमें बड़ी आत्मीयता थी, बड़ा लगाव था। खाना खाया? यही नहीं, अपने घर से कम से कम दो–तीन लोगों के खाने भर को खाना मँगाते थे कि अपनों में कोई भूखा न रह जाय।

जितना काम अपने उत्तरदायित्व का (निर्वाह) करते थे, उससे ज्यादा काम अन्यान्य विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं से जुड़े हुए अपने मित्रों, प्राध्यापकों, प्रोफेसरों, समवर्गियों का करवाने के लिए परेशान रहते–जिसका पारिश्रमिक बिल, यात्रा भत्ता देयक आदि–आदि विश्वविद्यालय में रुका होता– उसे पास कराने में ।

जिससे भी मिलते, बड़ी प्रसन्नता से, हँसते–मुस्कराते हुए –बड़ी आत्मीयता के साथ।

अपने कर्मचारियों का पूरा सहयोग करते थे और उनके हक के लिए सदैव ध्यान देते थे।

सन् 2008 में ही मेरे बेटे की नियुक्ति हो गयी (भारतीय सेना में 'लेफ्टिनेंट के रूप में) तिवारी जी ने शादी की चर्चा की, बात बढ़ती रही, समय बीतता रहा और नवम्बर 2013 में उनकी द्वितीय–अद्वितीय पुत्री 'निमिषा' से विवाह सम्पन्न हो गया। अन्ततः मुझे इस बात की प्रसन्नता सबसे ज्यादा रही कि मैं अपनी बात पर स्थित रह पाया, मेरे बेटे ने कहना माना और मेरा साथ दिया तथा प्रो0 तिवारी ने मुझे अपने रिश्ते लायक माना। संयोग देखें, उन्होंने ही मुझे सदैव दिया, मुझसे उन्हें कभी कुछ नहीं मिला– वह स्थिति और संयोग ही नहीं बना कि मैं भी उनके लिए कुछ कर पाता। एक बात यह भी कि जहाँ तक हम लोगों के बीच सम्बन्धों की बात वही, कमी एक–दूसरे से कुछ भी कह नहीं पाये, एक अनकहा प्रेमभाव दोनों और छाया रहा, जो केवल मन–ही–मन या फिर आँखों से ही व्यक्त होता था। कारण जो भी रहा हो, पर मुझे लगता है कि – मैं महाविद्यालय के प्रोफेसर, मैं सदैव लेने पाने की स्थितिवाला और वे सदैव देने की स्थिति–हैसियत में, हमारी ओर से उनका कद–पद सदैव बड़ा रहा और उनकी ओर से सम्बध–जुड़ाव के बाद भी एक–दूसरे टोकाटोकी नहीं कर पाये, कुछ रोक नहीं पाये। जैसे–खाने पीने के मामले में बेहद लापरवाह थे, स्वास्थ्य सम्बन्धी चिकित्सीय सलाह के बावजूद आलू खा लेते थे, अपने स्वास्थ्य को चिन्ता ही नहीं करते थे– शुगर के बावजूद आलू खा लेते थे, अक्सर मिठाई खा लेते थे– परिजनों के बार–बार मना करने के बावजूद। अब सोचने पर दुःख होता है कि मैं कभी उनसे इस मामले में जिद क्यों नहीं कर पाया। बस–'ऊधो, मन की मन में रही।'

आज साल भर हो गये तिवारी जी को देखे हुए (देखा तो कई–कई बार, पर तस्वीर में मूक)। इस बीच जब भी मुझे उनकी याद आयी– और बहुत याद आती है– बहुत दुःखी हुआ हूँ। ''न हाथ थाम सके ना पकड़ सके दामन, मेरे करीब से उठकर चला गया कोई।'' जाते–जाते कुछ कहा नहीं, कुछ बताया नहीं, जाने पर कोई चिटठी–पत्री नहीं, कोई सन्देश नहीं, पता नहीं कहाँ चले गये–बेहद सबको दुःखी करके। परम प्रभु से मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि हमारे डा0 तिवारी इस धराधाम में – ब्रह्माण्ड में जहाँ–कहीं, जिस भी रूप–स्वरूप में हों सकुशल – स्वस्थ – सानन्द हों, वैभव के साथ हों और हमारे प्रति अपनी कृपा बनायें रखें। उन्हें मेरा शत–शत नमन। ❑

सम्प्रति : पूर्व प्रधानाचार्य, बहुगुणा पी0जी0 कॉलेज, लालगंज, प्रतापगढ़।

भावांजलि

❑ कुलवीर सिंह चौहान

प्रोफेसर एस0 पी0 तिवारी जिनका मुस्कुराता चेहरा अक्सर कुमार स्वामी फाउण्डेशन की बैठक में देखने को मिल जाता था, आज भी बरबस याद आ जाता है। वह जब भी फाउण्डेशन की मीटिंग में उपस्थिति रहते थे बड़ी जिज्ञासाएं और उत्साह से ओतप्रोत हम सबको मार्गदर्शन प्रदान कराते थे। प्रो0एस0पी0 तिवारी जी का भले ही आर्थिक विषयों से नाता था किन्तु लोक मानस की व्यवहारिक समस्याओं और ग्रामीण जनजीवन के प्रति वह बहुतज संवेदनशील थे। जब भी हमें उनसे मिलने का अवसर मिलता वह कुछ ही पलों में आत्मीय भाव से हमारे सारे सुख–दुख बाँट लेने को उत्सुक जैसे दिखते थे। अनेक प्रशासनिक, अकादमिक और पारिवारिक दायित्यों के बावजूद उनके चेहरे की मुस्कान हर किसी को प्रसन्नचित्त कर देती थी। अवध विश्वविद्यालय ही नहीं सारे भारत के अनेक शिक्षाविदों से उनके मधुर सम्बन्ध उनके विशाल व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित करते हैं। आज वह भले हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनके व्यक्तित्व की अद्भुत छाप सदैव मेरे मानस पटल पर अंकित रहेगी। ऐसे सहृदयी, लोकदृष्टा को मेरा शत शत नमन। ❑

सम्प्रति : संस्थापक सदस्य कुमारस्वामी फाउण्डेशन, लखनऊ

अपने विषय के उत्कृष्ट विद्वान

❐ डा० एस०पी० त्रिपाठी, लखनऊ

प्रो0 शारदा प्रसाद तिवारी अवध विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग में वरिष्ठतम आचार्य थे। विश्वविद्यालय की प्रत्येक गतिविधियों में आपकी सक्रिय भूमिका रही है। अकस्मात हृदय गति रुक जाने से असमय आपके निधन से विश्वविद्यालय परिवार का ही नहीं पूरे समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। आप अपने विषय के उत्कृष्ट विद्वान रहे हैं। देश के अर्थशास्त्रियों में आपकी पहचान थी, विषय पर गहरी पकड़ थी, साथ ही व सच्चे मानव के प्रतिमूर्ति थे। कोई भी व्यक्ति किसी भी कार्य के लिए जाता था, उसका कल्याण निश्चित था।

डा0 तिवारी का हमारा परिचय उस समय से था जब वे कानपुर विश्वविद्यालय में प्रौढ़ शिक्षा के समन्वयक थे। सम्भवतः 1985 में साक्षरता निकेतन में एक माह का प्रशिक्षण था। चूँकि मैं, आयु में वरिष्ठ था इसलिए उनके हृदय में मेरे प्रति सम्मान बड़े भाई जैसा था। प्रो0 होने के बाद भी .जब भी मुलाकात हुई मुझे वही सम्मान मिला। मैं ही नहीं जो भी उनके सम्पर्क में रहा, एक सम्पूर्ण मानव के रूप में पाया। मैं हृदय से उनकी पत्नी और उनकी बेटियों के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें हार्दिक कष्ट को सहन करने की क्षमता दें और उन्हें सद्गत प्राप्त हो, यही ईश्वर से प्रार्थना है। ❑

सम्प्रति : पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी, मुमताज डिग्री कॉलेज, लखनऊ

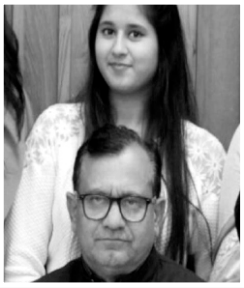

सुबह हुई थी आँखे खोलीं, पाया साथ तुम्हारा,
रात हुई जब सोने पहुँचे, सर पर हांथ तुम्हारा।
अब कैसे हम यह सब पायें, प्यार साथ और साया,
बड़ा था आँगन, छोटे हम थे, ऐसी थी कुछ काया।
यादों में हरदम अब से है ये संसार हमारा,
याद समय की जब भी आती रोक ना पाते धारा।
उन बीते दिन साथ तुम्हारा, हमने जो कुछ पाया,
बहुत उदासी छायी मन में, याद समय जब आया।

❐ वत्सला तिवारी

प्रो० तिवारी छात्रों के सच्चे मार्गदर्शक थे

❐ डा० प्रिया कुमारी

प्रो0 शारदा प्रसाद तिवारी अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग में एक विद्वान के रूप में जाने जाते हैं। प्रो0 तिवारी कृषि, अर्थशास्त्र, ग्रामीण अर्थशास्त्र एवं लोक अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ थे। इन विषयों के बारे में आवश्यक तथ्यों से छात्रों को अवगत कराते रहते थे। विभाग के प्रति, प्रो0 तिवारी ने वर्ष 2013 मे' विभागीय सहयोग से 'उत्तर प्रदेश–उत्तराखण्ड आर्थिक संघ' की 9वीं वार्षिक आर्थिक अधिवेशन का आयोजन किया। जिससे छात्रों को बहुत लाभ हुआ। उन्होंने अपने शैक्षणिक जीवन में सेमिनार, संगोष्ठी एवं विभिन्न विषयों के व्याख्यान समय–समय पर करवाये। वर्ष 2013 में 'अवध इकानॉमिक एसोसिएशन फैजाबाद' का गठन किया जिससे पिछड़े क्षेत्र के छात्रों एवं अध्यापकों को लाभ मिला। वह बहुत ही मृदुभाषी एवं सरल व्यक्तित्व के प्रोफेसर थे। छात्रों एवं अध्यापकों के प्रति भी उनका व्यवहार बहुत ही सौहार्दपूर्ण था, जिसको कभी भुलाया नहीं जा सकता। अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग प्रो0 तिवारी के उक्त सेवा के लिए हमेशा अभिभूत रहेगा और उन्हें अपनी ओर से इन्हीं शब्दों के माध्यम से श्रद्धा–सुमन करते हुए अपनी भावाजंलि अर्पित कर रहा है। ❑

सम्प्रति : अस्टिेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग, डा0 रा0म0लो0अवधि विश्वविधायक, फैजाबाद

एक व्यथित आत्माभिव्यक्ति

29 जनवरी को राजभवन में मिलना है

❒ डॉ० घनश्याम द्विवेदी

अर्थशास्त्र विषय में परास्नातक कर लेने के उपरान्त विशम परिस्थितियों के संजाल में निबद्ध रहने के पश्चात् भी पी–एच0डी0 की डिग्री लेने की महत्वकांक्षा से पूर्व परिचित आदरणीय चाचाश्री डॉ0 ए0एन0 सिंह (समाजकार्य विभाग) जी के साथ 17 नवम्बर, 1995 को लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में बस अकिंचन ही घूम रहा था कि सहसा मृदुभाशी, विनम्र स्वभाव धारिणी श्रद्धेया डॉ0 भारती पाण्डेय जी से मुलाकात हो गयी। उनके सानिध्य से उसी दिन सायं विश्वास खण्ड, गोमती नगर में जिस विशिष्ट व्यक्तित्व का दर्शन हुआ, ऐसे परमपूज्य प्रातः स्मरणीय गुरुवर्य प्रोफेसर ए0पी0 तिवारी जी के निर्देश पर 21 नवम्बर, 1995 को जब मैं डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद के अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग में श्रद्धेय गुरुवर्य प्रोफेसर एस0पी0 तिवारी जी के श्रीचरणों में उपस्थित हुआ, तो उनकी स्नेहछाया एवं अहेतुकी कृपा पाकर मेरा वह सब मिथक टूट गया, जिसे मैं समझता था कि ''मुझ जैसा संसाधनहीन, अकिंचन एवं जटिल पारिवारिक दुरूहताओं में आबद्ध व्यक्ति के लिए पी–एच0डी0 की डिग्री दुर्लभ है।'' बस क्या था.....

''मैं कर्म पथ पर चल पड़ा, गुरुदेव का आशीष लेकर। कठिनाईयाँ हरते रहे,गुरुदेव भी आशीष देकर।''

मुनीश्वरदत्त पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, प्रतापगढ़ में अर्थशास्त्र विभाग में मानदेय प्रवक्ता के रूप में शिक्षण कार्य करते हुए, जब 19 जून, 1998 को मैं यू0जी0सी0 की नेट परीक्षा उत्तीर्ण किया, तब मुझे याद है कि गुरुदेव हमारे बहुत प्रसन्न हुए थे। गुरुदेव की कृपा से तमाम दुराग्रहित संरचनाओं के संजाल से उबरते हुए, जून 2002 में जब मुझे पी–एच0डी0 की डिग्री एवार्ड हुई तो मेरा कल्पनातरू पल्लव और पुष्प से रंजित हो उठा। मैंने अपने भाग्य को सराहा कि मैं पूज्य गुरुदेव का प्रथम शोध छात्र था। इस कार्य की पूर्णता में गुरुदेव की अहेतुकी कृपा का शाब्दिक निर्वचन मेरी सामर्थ्य में नही है। समय बीतता गया, कर्मक्षेत्र में लगातार संघर्ष करते हुए, असफलताओं की निरन्तर श्रृंखला से जब कभी धैर्य टूट जाता था, तब पूज्य गुरुदेव कहते थे ''घनश्याम! तुम निराश मत हो। तुम एक न एक दिन असिस्टेण्ट प्रोफेसर जरूर बनोगे। वैसे भी तुम जहाँ हो, अच्छा कार्य कर रहे हो। अपने घर पर हो, माता–पिता की सेवा करते हुए, तमाम सामाजिक दायित्वों का भी निर्वहन कर रहे हो। बच्चों को अच्छी शिक्षा दे रहे हो आदि। आदि, यह क्या कम है?''

गुरुदेव के यही शब्द मुझे सम्बल प्रदान करते रहे

और मैं अहर्निश चलता रहा। बस इसी समय नियति–नटी ने मेरे जीवन में एक क्रूर खेल खेला और 31 अगस्त 2012 को 39 वर्ष की अवस्था में मेरी जीवन संगिनी हमेशा के लिए मेरा साथ छोड़ गयी। मैं टूट गया, कर्म पथ पर अग्रसर होते मेरे पांव थम गये, सबकुछ बिखर गया। गुरुदेव को जब जानकारी हुयी, स्तब्ध रह गए। मुझे याद है, अपनी सफेद एम्बेस्डर गाड़ी से मेरे घर आए और ईश्वर की गति को स्वीकार करते हुए, सम्मुख उपस्थित दायित्वों का निर्वहन एवं जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की।

बस इस घटना से न जाने क्यों, पूज्य गुरुदेव का स्नेह मेरे लिए और बढ़ गया था। मैं भूल जाता था, किन्तु सप्ताह में दो बार कम से कम वे मुझसे बात जरूर कर लेते थे। उनका सम्बल पाकर मैं पुनः स्वयं को मजबूत बना रहा था। इसी क्रम में माता–पिता, गुरुजनों एवं ईश्वर की असीम कृपा से मात्र तीन माह के अन्तर पर मेरे दोनों पुत्रों को सरकारी सेवा में आ जाने से मुझे और भी मजबूती मिली। यह समाचार सुनकर गुरुदेव बहुत प्रसन्न हुए थे और मुझे तथा मेरे पुत्रों को बहुत आशीष दिए थे। इसी बीच 12 अगस्त, 2016 को इलाहाबाद से लौटते समय गुरूजी का हमारे घर पर आगमन हुआ, मैं सपरिवार धन्य हो उठा। रात्रि विश्राम के पूर्व मुझे अपने पुत्र–पुत्रियों और पुत्रवधू के साथ पूज्य गुरूदेव की सेवा करने का जो अवसर प्राप्त हुआ, वह शायद मेरे पूर्व जन्म का कोई पुण्य रहा होगा। रात्रि में लम्बे समय तक जागते रहने एवं तमाम मुद्दों पर चर्चा–परिचर्चा करते–करते मुझे सोने का आदेश देकर स्वयं गुरुदेव ''जिसकी लागी रे लगन भगवान में, उसका दीया भी जलेगा तूफान में'' भजन सुनते हुए, सो गए और प्रातः तत्कालीन जिलाधिकारी, अमेठी श्री चन्द्रकान्त पाण्डेय जी से मिलते हुए, मेरा भी उनसे परिचय कराते हुए, फैजाबाद चले गए। पुनश्चः मेरे अनुरोध पर पूज्य गुरुदेव श्रद्धेया चाची जी के साथ ब्रह्मलीन सन्त शिरोमणि श्री स्वामी परमहंस महाराज आश्रम, टीकरमाफी में उपस्थित होकर रूद्राभिषेक किए और आश्रम पर उपस्थित विद्यार्थियों तथा सन्तों का एक विशाल भण्डारा किए, जो मेरे लिए मेरे जीवन का एक अद्भुत क्षण था। पूज्य गुरुवर्य के मन में बस यही इच्छा थी कि एक बार विश्वविद्यालय में सर्वोच्च गरिमामयी पद पर आरूढ़ होने का सुअवसर प्राप्त हो जाए .....। हम सब ईश्वर से इस दिन की दुआ करते रहे। 10 जनवरी, 2017 को राजभवन में महामहिम के यहां उनके सचिव, आदरणीय श्री प्रकाशचन्द्र पाण्डेय जी से मिलने की प्रत्याशा में पूज्य गुरुदेव के साथ राजभवन में बैठा था कि अचानक उन्होंने मुझसे कहा ''घनश्याम देखो अभी बेटे की शादी कहीं तय मत करना, जब भी समय आएगा, मुझसे पूछ लेना।'' मैं निःशब्द भाव विह्वल बस इतना कह सका कि सर यह तो आपका आशीष प्रसाद ही है। इसके इतर मैं कहाँ .....। बस उस दिन हम लौट के आए, पर न जाने क्यों गुरुदेव का स्नेह दिनप्रतिदिन और बढ़ता रहा तथा एक दो दिन के अन्तराल पर हमारी बात जरूर हो जाया करती थी। 26 जनवरी, 2017 को दिन में गुरुजी का फोन आया (जो अन्तिम था) और बोले कि ''घनश्याम 29 जनवरी 2017 को राजभवन में मिलना है...।'' मैं फैजाबाद से 11 बजे तक लखनऊ पहुंच जाऊंगा, तुम अमेठी से आ जाना। मैंने कहा, जी ठीक है। यद्यपि उनके सम्बन्धों की लम्बी श्रृंखला के सबसे निचले पायदान से भी बहुत नीचे मेरा वजूद था, परन्तु न जाने क्यों वे मुझे इस कार्य में अपने साथ ले जाते थे .., यह सिर्फ मेरा सौभाग्य ही था। 27 जनवरी, 2017 की रात 12:10 बजे गुरुदेव के ही व्हाट्सअप नम्बर से मेरे मोबाइल पर एक दुखद सन्देश छपा था। "Bhaiya Papa ki death ho gayi"A 28 जनवरी 2017 को प्रातः जब मैं अपना मोबाइल ऑन किया और इस अविश्वसनीय सन्देश को पढ़ा, तो अपनी चित्वृत्ति का कैसे वर्णन करूं। जब तक मैं कुछ समझ पाता, पूज्य गुरुदेव पावन अयोध्या धाम में पतित पावनी सरयू मइया की गोद में सदा के लिए विलीन को चुके थे, आगे मैं क्या कहूं.....बस यही कि.....

सबका निचोड़ लेकर बस, सुख से सूखे जीवन में।
गुरुदेव नमन करता हूँ, श्रद्धा से अन्तर्मन से।।

पूज्य गुरुदेव को उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर सश्रद्ध श्रद्धांजलि।। ❑

सम्प्रति : सहायक अध्यापक, उच्च प्राथमिक, विद्यालय, बनवारीपुर, वि.ख. भेटुवा, जिला–अमेठी।

हमारी ही अन्तरधारा के अनुगामी थे प्रो० तिवारी

❐ डॉ० नरेन्द्र शंकर एवं डॉ० प्रमिला पाण्डेय

भागमभाग भरी आधुनिक दिनचर्या को सरल और नपे–तुले शब्दों में उतारने वाले थे, डॉ0 रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ प्रोफेसर डॉ0 एस. पी. तिवारी जी। साहित्यकार, चिन्तक, अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग के मर्मग और सबसे बढ़कर एक समर्पित विद्वान रहे डॉ0 एस.पी. तिवारी जी का निधन हुए एक वर्ष हो गया, परन्तु अपने विचारों, व्यवहार एवं चिन्तन के जरिए वे आज भी अपने परिजनों, परिचितों और उन तमाम लोगों जो उन्हें दूर–दूर से भी जानते और सुनते थे उनके आस–पास आज भी उपस्थित हैं।

हमारे और उनके बीच वैचारिकता के स्तर पर भेद रहा हो लेकिन मैं जैसा मानता हूँ कि वह भी रूढ़ था, सतही था। मेरा मानना है कि वे जिस विचारधारा के निकट थे, उस विचारधारा में भी वे जिस अन्तरधारा के अनुगामी थे, उसका लक्ष्य बिन्दु वही था, जो हमारा है। 'सादा जीवन उच्च विचार' के पक्षधर, राष्ट्र का व्यापक हित, सबके प्रति समान भाव, पोंगापंथ के विरत, सांस्कृतिक मूल्यों से लगाव, अपनी माटी से लगातार जुड़े रहने की कोशिश, वंचितों के लिए उद्वेलन की स्थिति तक सोचने की कशिश, अपने थाती और विरासतों से आबद्ध रहने का संकल्प, जैसे कई पहलू थे जहाँ उनकी वैचारिकता का स्तर उच्चतम को प्राप्त करता था।

इसमें कतई शक़ नहीं कि ऐसे में कई अवसर विश्वविद्यालय में आये जब उनके मतभेद सार्वजनिक हुए। लेकिन उनका बड़प्पन और उनके स्नेहाभाव ने सबको फिर से एक किया। हमारी और उनकी अन्तिम मुलाकात 23 जनवरी 2017 को फैजाबाद में हुई थी। उस दिन उनसे देश के विश्वविद्यालयों में होने वाले निरन्तर गिरावट पर काफी चर्चा हुई, फिर उन्होंने मुझे, आप सब की चिर–परिचित और उनकी पहली और अन्तिम पसन्द एम्बेस्डर कार से विश्वविद्यालय छोड़ा। फिर शाम को उन्होंने मुझे चाय के लिए घर पर अपने स्कूटी से ले गये और वहाँ चाय पीते समय उन्होंने मुझे अपनी एक इच्छा बताई और उसमें सहयोग की अपेक्षा रखी। उन्होंने कहा कि मैं जब से तवांग (अरूणाचल प्रदेश) की यात्रा से लौटा हूँ तब से मैं चाहता हूँ कि एक संस्था या ट्रस्ट का गठन करूं। उसके आफिस के लिए स्थान की व्यवस्था आप करो और उन्होंने जिस स्थान को सुझाया उसके लिए मैंने कहा कि जो मदद की आवश्यकता होगी, उसके लिए मैं तैयार हूँ। उन्होंने कहा कि 2–3 दिनों में लखनऊ आऊँगा तब इस विषय पर फिर चर्चा करूंगा तब तक आप प्रोफार्मा लेकर रखिएगा। परन्तु नियति ने कुछ और निश्चित कर रखा था .... 3 दिन के बाद, आने की बात तो दूर, वो हम सभी को छोड़ कर पंच तत्व में विलीन हो गये।

मत कहो कि मर गया हूँ मैं
क्योंकि मैं जीवित हूँ आज भी
ध्यान से देखो तो सही
कि किताब के हर पन्ने तक जीवित हूँ
व्याख्यान कक्षों में ... ब्लैक बोर्ड पर ...
और सपनों का महल ... जो तुम्हें दिया है मैंने
लगन से सँवारना इसे
उसी लगन के परिणाम में...
जीवित मिलूँगा तुम्हें...
क्योंकि
सपनों के महल के.... साकार स्वरूप में
हर जगह... हर समय... जीवित हूँ मैं...।

इन्हीं पंक्तियों के साथ मैं डॉ0 मंजुला एवं हेमन्त उपाध्याय युगल को धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने डॉ0 शारदा प्रसाद तिवारी मेमोरियल ट्रस्ट बना के उनके सपनों के महल को साकार स्वरूप प्रदान कर उनकी आत्मा को अनन्त जीवन प्रदान किया है। इन्हीं शब्दों के साथ डॉ0 तिवारी जी को प्रथम पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। ❑

आज फिर दिल रोया

❑ डॉ० दिनेश सिंह

आज फिर दिल रोया है, आज फिर संसार रोया है। प्रो0 तिवारी सर आपके इस तरह अचानक चले जाने से सभी ने फूट–फूट कर रोया है। 27 जनवरी 2017 की वह बदनसीब सुबह हम सभी के लिए काल बन कर आयी थी। जिसने हम सभी के प्यारे तिवारी सर को हम सभी से जुदा कर गई थी। आपका वह मुस्कुराता चेंहरा हम सभी को बहुत याद आता है। आपके साथ बिताये गये हर सुनहरे पल को कोई भी नहीं भूल पाता है। आपने हर गरीब व मजबूर व्यक्ति का हमेशा दिल से मदद किया था। आपको अम्बेस्डर कार रखने व चलाने का बहुत शौक था। आपको खाने में सादा भोजन और मीठा बहुत पसंद था। आपके वि0वि0 व अपने परिवार के हर समस्या का बड़ी आसानी से हल किया था। आपने अपने परिवार व रिश्तेदार का हर पल–पल पर साथ दिया था। गुड़िया, मुनमुन और श्रेया ने अपने बीच से अपने पापा को खो दिया। मैने, डॉ0 विनय मिश्रा व अमित ने अपने प्रिय मार्गदर्शक व संरक्षक को खो दिया।

अवध विश्वविद्यालय की आप आन–बान व शान थे। अर्थशास्त्र विषय के आप शिक्षक महान थे। आंटी जी आपको कमी खलती है वह फूट–फूट कर रोती है।

अंजुला दीदी, मंजुला दीदी, हेमंत जीजा, आशू और बुलबुल के आप प्यारे चाचा थे। शैलजा मिश्रा, शिवांगी मिश्रा के आप दुलारे मामा थे। 1अक्टूबर 1959 को भारत माता की इस पावन धरती पर एक महान अर्थशास्त्री ने जन्म लिया था। जिसने भारत के सामाजिक व आर्थिक विकास को बढ़ाने का प्रण लिया था। आपको आपके बढ़ाने में आपके दोनो बड़े भाइयों ने हमेशा मदद किया था। आपको आपके प्रिय मित्र डॉ0 बअंसल जी ने हर पल साथ दिया था।

अवध विश्वविद्यालय का अर्थशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग आपके बिना सूना हो गया। जिसने भी आपके न रहने का समाचार सुना व हैरान व परेशान हो गया। किसी को भी आपके अचानक चले जाने का आज भी यकीन नहीं होती है। हर बूढ़, बच्चा व जवान आज भी आपको याद करके रोता है। ❑

सम्प्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

वह चेहरा अक्सर सामने आता है

❒ गौरव मिश्रा

जाने वाले कभी नहीं आते,
जाने वालों की याद आती है,
सादगी थी जिनकी अमानत,
वह चेहरा अक्सर सामने आता है

अच्छे लोग कभी नहीं मरते। वह शरीर से तो आजाद हो जाते हैं, लेकिन उनकी यादें दिलों में हमेशा घर किया करती हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, मेरे चचेरे ससुर, श्री शारदा प्रसाद तिवारी की सबसे बड़ी खूबी उनकी मानव संवेदना थी। चाहे कोई भी हो, मानव कर्तव्य के प्रति सच्ची भावना के कारण ही वह राह दिखाते प्रकाश पुंज की तरह ह्रदय में विराजमान हैं।

इंसान का जीवन एक प्रकार सा नहीं होता। उतार–चढ़ाव जीवन का अभिन्न अंग है। परंतु किसी भी व्यक्ति का असली चरित्र तभी देखा जा सकता है, जब भाग्य अच्छे दिन नहीं दिखा रहा होता है। मेरे और अंजुला (मेरी धर्म पत्नी) के जीवन में एक ऐसा समय आया था, जिसके बारे में कुछ ही लोग जानते है। ऐसे लोग, जो शायद संबंधी होने के कारण सामज की दृष्टि में घनिष्ठ कहलाते हैं, का आचार– व्यवहार को नजदीक से मैंने अनुभव किया। मानव होने के बावजूद, मानव चेतना व मानव मूल्य का अभाव आज के समाज में अधिकता से पायी जाती है । समस्या को अनदेखा करना, या समस्या को सुलझाने में रोड़ा बनना, आज के समाज की प्रवित्ति बन गयी है। ऐसे समय में, चाचा जी समाज के उन चंद लोगों में आते हैं, जो प्रवाह के विपरीत, मानव मूल्यों के आधार पर समाधान करने का प्रयास करते हैं। चाचा व कुछ अन्य सम्मानित लोगों के कारण ही शायद मैं और अंजुला साथ–साथ जीवन में आगे बड़ रहे हैं। आज भी अंजुला अक्सर कहती है, "वह मेरे चाचा नहीं थे, बल्कि उनमें पिता पाया, जो हमेशा साथ थे, हैं और रहेंगे"।

चाचा जी अर्थशास्त्री तो थे ही, परंतु एक व्यक्ति के रूप में हमेशा याद रहेंगे, जिन्होंने परिवार और समाज को बांधने का कार्य किया है। वह लोंगों से इस प्रकार मिलते की 'संवादहीनता' हो ही नहीं सकती थी, जिसके कारण विपरीत परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं।

चाचा जी एक प्रेरणाश्रोत हैं, जो की हमेशा साथ रहेगा । मेरा शत शत नमन। ❑

सम्प्रति : विभागध्यक्ष कम्प्यूटर एम्पलीकेशन्स विभाग, श्री रामस्वरूप, मेमोरियल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड मैनजमेण्ट, लखनऊ

कहाँ आप चले गए.....

❐ प्रियम त्रिपाठी

छोटे मामा, एक साल होने को हैं आपको हमसे दूर हुए और लगता है कल की बात है जब आप हमारे घर हर साल राखी पर चाहे दिन हो या रात माँ से राखी बंधवाने आते थे, वो आपका मिठाई और मांगकर खाना और लास्ट में कहना कि मेरा वाला डिब्बा रख दिया है कि नहीं सब याद आता हैं।

मेरा आपका रिश्ता शायद 'नमस्ते मामा' तक ही सीमित था। परंतु मैंने हमेशा आपको अपनी माँ की दृष्टि से देखा था। उनका मायका नाना नानी के जाने के बाद से जैसे सिर्फ आपसे ही रहा हो। जब भी माँ को मुसीबत के समय कोई जरूरत रहती थी आप हमेशा साथ खड़े थे। तीनों भाइयों में सबसे ज्यादा स्नेह और लगाव माँ का आपसे ही था। बीते एक साल में शायद ही ऐसा कोई दिन बीता हो जब माँ आपको याद करके न रोई हो, 'हमार शारदा' कह कह कर रोती हैं। मुझे आपके सामने कभी कुछ बोलने की हिम्मत नही हुई, आपके जाने के बाद कुछ लिखकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की कोशिश कर रही हूँ।

आप किसी एक के नहीं बल्कि सबके जीने का सहारा थे, इस सहारे की कमी हमेशा रहेगी हम लोगो को।

आपकी भांजी– प्रियम ❑

शत-शत नमन उस पुण्य आत्मा को

❐ डॉ० वंदिता पाण्डेय

शत् शत् नमन उस पुण्य आत्मा को। एक वर्ष बीत गए पर जैसे लगता है कि कल की ही बात हो। मुझे अच्छे से याद है गणतंत्र दिवस का दिन था। विश्वविद्यालय में सभी लोग ध्वजारोहण के लिए एकत्र थे। तभी जीजाजी आये और अपनी उसी चिरपरिचित मुस्कान के साथ सभी को गणतंत्र दिवस की बधाइयां देने लगे। किसी को क्या मालूम था कि एक दिन बाद सभी इस मुस्कराहट को तरस जायेंगे। आज भी मैं वो पल भूल नहीं पाती हूँ। विश्वविद्यालय में कोई भी आयोजन होता है, हर आयोजन में आपकी कमी महसूस होती है। कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि सब लोग तो आ गये, जीजा जी नहीं दिख रहे तब सहसा अहसास होता है कि आप तो अब कभी नहीं दिखेंगे। इस दीक्षांत समारोह मैं जब आपके नाम से मेडल देने की घोषणा हुई तो सभी के साथ साथ मैं भी गौरवान्वित महसूस कर रही थी। जीजा जी माँ और पिता के बाद जिन्होंने भी मेरी जिन्दगी सँवारने में मेरी मदद की है उनमें से आप भी थे। शायद ससुराल में सबसे ज्यादा मुझे आपका और दीदी का सानिध्य और सहयोग मिला है। आज जहाँ भी मैं हूँ, वो आपकी ही वजह से हूँ। जिसके लिए मैं जिन्दगी भर आपकी ऋणी रहूँगी।

वर्ष 2017 जिसकी शुरुआत में मैंने एक ऐसे इंसान को खोया जिसका सहयोग मुझे हर कदम पर मिला। वर्ष के अन्त में मैंने अपनी माँ को खोया जो मेरी शक्ति थीं और जिस दुःख से मैं अभी तक उबर नहीं पायी हूँ। 2017 ने हमारे दो अभिन्न को हमसे छीना है, किन्तु हमारा यही प्रयास रहेगा कि हम उनके सद्गुणों से सदैव मार्गदर्शित होते रहें। ईश्वर उन दोनों पुण्य आत्माओं को शान्ति प्रदान करें। ❑

सम्प्रति : डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।

माई तेरा सरदार चला गया

❐ डॉ० तृप्ति त्रिपाठी

मामा आपकी स्मृति वियोग के तरंगाघात से साक्षात्कार करा देती है। मामा आपका वियोग नयनाम्बु से पूरित होकर उमड़ते हुए मनोभूमि को उद्वेलित करता रहता है। माँ शारदा का प्रसाद कप छोटे मामा के रूप में ननिहाल को मिला था। , सभी भाई बहनों में छोटे भाई होने के नाते वो माँ को सबसे प्यारे थे। अपनी छोटी संतान पर माँ का ममत्व, स्नेह अधिक रहता है। नानी का वात्सल्य, ममत्व भी छोटे मामा पर अधिक था। परम्परागत रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी वही स्नेह सहज रूप से नानी से माँ में आया और माँ से विरासत स्वरूप मुझ में आया।

नानी मामा को 'सरदार' कहकर बुलाती थीं। अपने इस नाम को सार्थक करते हुए उन्होंने इस पूरे परिवार के लिए सदैव सरदार की ही भूमिका निभाई। परिवार, समाज में किसी को दुःख हो, परेशानी हो, समस्या हो सबसे पहले अपनों के नाम पर वो ही याद आते थे।

इस बार जब रक्षाबंधन का पर्व आया तो उनकी कमी माँ के चेहरे पर साफ दिख रही थी। बड़ा ताज्जुब होता जब माँ को इस 63 वर्ष की अवस्था में भी भाई के लिए दिन भर भूखा प्यासा रहते हुए देखती थी। जब तक वे राखी बाँध न लें तब तक पानी भी नहीं पीती थीं। कितना समझाने पर भी वह नहीं मानती थी। उनकी बूढ़ी कॉपती उंगली के उस राखी की डोर से न जाने कितना प्यार भरोसा रहता था कि मामा कहीं भी हो उनकी कितनी भी व्यस्तता हो वे शाम, रात तक आ ही जाते थे माँ से राखी बंधवाने के लिये। इस बार न उनके आने का इंतजार था, न ही माँ को दिलाशा दिलाने का साहस। अमूक से थे सभी लोग।

अपनी सहृदयता, कोमल भाव एवं संवेदन शीलता के कारण वे विशिष्ट थे। याद आता है अपना अतीत, अपना बचपन,। अतीत बचपन का बड़ा ही सुखद होता है। हमारे यहाँ गाँव में कोई मांगलिक कार्यक्रम हो या कोई दुखद घटना घटित हुई हो, इतने बड़े परिवार में सभी के नाते रिश्तेदार आते थे। हमारे ननिहाल का प्रतिनिधित्व सदैव छोटे मामा ने ही किया। बहुत कम उम्र में ही उन्होंने भाई बहनों के रिश्तेदारों के संबंधों को बाखूबी निभाना शुरू कर दिया था। बचपन के कई कार्यक्रम याद आते हैं जब चाचा, ताऊ के रिश्तेदारों को देखकर हम भाई बहन भी आशा लगाते थे कि आज हमारे नानी के यहाँ से कौन आएगा। मामा के सफेद अम्बेस्डर कार आते ही हम लोग गौरवान्वित हो जाते थे कि हमारे मामा आ गये। दुखद की घड़ी में उनका कोमल, संवेदनशील रूप और मांगलिक उत्सवों में उनका हास–परिहास, आमोद–प्रमोद का अंदाज सभी को हंसाता था।

ग्राम्य जीवन से उनकी गहरी संप्रक्ति थी, ग्रामीण अंचल के साथ उसके मन का तादात्म्य अद्‌भुत था, अन्न–जल, खेत–खलिहान, घर–दुआर, तालाब, कुँआ, गाँव की रजरज से उनका रागात्मक संबंध था। लोक मानस के बड़े पारखी थे। उन्होंने अपना व्यक्तित्व ही ऐसा बनाया था कि दूर–दूर के लोग भी उन्हें अपना बनाने–बताने के लिए आकुल रहते थे। कार्य व्यवहार, वाक्य चातुर्य के वे धनी थे। उनमें कोमलता भी थी चरम सीमा पर, उग्रता भी अन्तिम सीमा तक।

वे परिवार के आश्रय सागर थे। जिनको कहीं न ठौर मिले, उसके वे आश्रयदाता बन जाते, अभिभावक बनकर जीवन संवार संभाल देते।

श्रद्धाभिभूत होते हुए कुछ पंक्तियाँ आपके लिये–

आँसुओं से धुली खुशी की तरह,
रिश्ते होते है शायरी की तरह।

जब कभी बादलों में घिरता है,
चाँद लगता है आदमी की तरह।।

किसी रोज़न किसी दरीचे से,
सामने आओ रोशनी की तरह।

सब नज़र का फरेब है वर्ना,
कोई होता नहीं किसी की तरह।।

आपकी भांजी। ❑

लव यू पापा - मिस यू अ लॉट

❐ विदुला शुक्ला

सबके लिए हमेशा मुसीबत से बचाने के लिए ढाल का काम किया। कितना कुछ सहते रहे और हम उन्हें बहुत स्ट्रांग समझते रहे। काश ! उनकी थोड़ी जिम्मेवारी उठा लिये होती। उनके बाद अब उनके सिखाये सिद्धान्तों पर चलना है और उनका नाम रोशन करना है। बहुत मुश्किल था इतना लिखना, और इतनी बातें है जोकि लिखना मेरे लिये मुमकिन नहीं।

समय कितना बलवान होता है, अब समझ में आता है। कभी सोचा भी नहीं था कि आपके बिना भी जी सकते हैं हम, पर देखो एक साल बीत गया और लगता है कि कल की ही बात है। कैसे हमें तुरन्त लखनऊ चलने को कहा गया, कुछ नहीं बता रहे थे और परेशान थे और जैसे ही हमें पता चला की मेरे पापा की तबीयत खराब है, कुछ समझ नहीं आया कि क्या हुआ होगा, कैसे होंगे। और जैसे ही फैजाबाद पहुँचे लगा कि सब खत्म हो गया। उसके बाद तो जीवन हो सकता या बस पापा को महसूस करना चाहते थे अगर ये सब ना देखा होता तो कभी यकीन ही नहीं होता पापा अब कभी नहीं आयेंगे। अब उनके साथ बिताया हुआ हर वक्त ही है जो हमको आगे बढ़ने की हिम्मत देता है। लास्ट दिसम्बर को अचानक ही (जैसे पापा के प्लान बनते थे) भोपाल मेरे साथ आने का प्लान बना। पूरा टाइम रिशित को संभाल रहे थे, एक बार रिशित का कान खींचा था रिशित ने हमें बताया तो खूब हंसे, बच्चों के साथ बिल्कुल बच्चे बन जाते थे। भोपाल में बहुत कम देर के लिए रूके थे, घर आते समय चना, अमरूद लिया था और कुछ नहीं ले गये थे....।

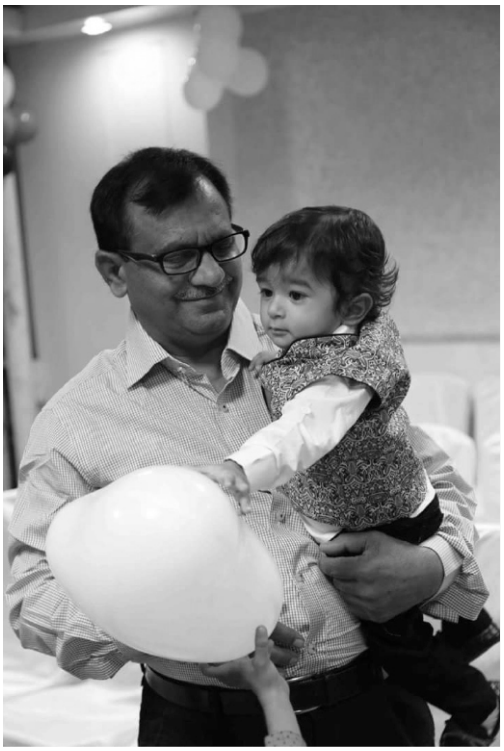

आखिरी बार स्टेशन पर उनके पैर पड़कर रिशित और हमने आशीर्वाद लिया था। व्हाट्सप पर रेगुलर काल करते थे बोलते थे ''बाबू से (रिशित) बात करा दो, उसे दिखा दो। बहुत ही पावरफुल पर्सनालिटी थे। अब लगता है कि कितना कुछ सीखना रह गया उनसे। हर प्राब्लम में सल्यूशन खोज लेते थे और बड़े ही धीरज से उसे फेस करते थे। जब भी कोई परेशान हो तो बोलते थे, ''मैं हूँ ना, सब ही कर देंगे''।

बड़ी बुआ और माधुरी बुआ की मृत्यु की सूचना उन्हें मेरे सामने ही मिली थी, परिवार के लिए बहुत ही इमोशनल रहते थे पर दोनों बार खुद कैसे संभाला उन्होंने और अपनी जिम्मेदारी और बाकी लोगों को बहुत अच्छे से ख्याल रखा। सबके लिए हमेशा मुसीबत से बचाने के लिए ढाल का काम किया। कितना कुछ सहते रहे और हम उन्हें बहुत स्ट्रांग समझते रहे। काश ! उनकी थोड़ी जिम्मेवारी उठा लिये होती। उनके बाद अब उनके सिखाये सिद्धान्तों पर चलना है और उनका नाम रोशन करना है। बहुत मुश्किल था इतना लिखना और इतनी बातें है, जोकि लिखना मेरे लिये मुमकिन नहीं।

इतनी शक्ति भगवान हमें दे कि उनके सपनों को पूरा कर सकें और उनकी आत्मा को शान्ति दें। ❑

एक संस्मरण

❐ निलय तिवारी

फिर उस व्यक्ति ने दुकानदार से कम दाम में समोसे देने का आग्रह किया और आतुर होके दुकानदार की ओर निहारने लगा। दुकानदार ने उस व्यक्ति को अनदेखा करते हुए अन्य ग्राहकों पर अपना ध्यान केंद्रित कर दिया। न जाने क्यों पर यह दृश्य देख कर मेरे मुँह पर हल्की सी मुस्कुराहट आ गयी। तभी चाचा मेरे पास से गुजरे और मेरी तरफ देख कर बोले कि ''हर आदमी के पास इतने पैसे नहीं होते कि वो समोसा खरीद सके।''

एक बार मैं और चाचा (प्रो0 एस0पी0 तिवारी) फैजाबाद से लखनऊ जा रहे थे। राज्य सड़क परिवहन निगम की बस में सफर मेरे लिये अक्सर नये अनुभवों से भरा रहता है। क्योंकि समाज के लगभग हर तबके के लोग इस सेवा का प्रयोग करते हैं और इस माध्यम से उनसे रूबरू होने का मौका मिलता है। उस बार भी एक ऐसा ही अनुभव हुआ। बाराबंकी से पहले बस एक ढाबे पर रुकी। सभी लोग अपनी आवश्यकता एवं सोंच के अनुसार खाने की चीजें खरीदने लगे। तभी मेरी नजर एक व्यक्ति पर गई जो चाट के काउण्टर के सामने खड़े होकर समोसे का दाम पूछ रहा था। दुकानदार के दाम बताने पर वह व्यक्ति कुछ बोले बिना उसकी ओर देखता रहा। फिर उस व्यक्ति ने दुकानदार से कम दाम में समोसे देने का आग्रह किया और आतुर होके दुकानदार की ओर निहारने लगा। दुकानदार ने उस व्यक्ति को अनदेखा करते हुए अन्य ग्राहकों पर अपना ध्यान केंद्रित कर दिया। न जाने क्यों पर यह दृश्य देख कर मेरे मुँह पर हल्की सी मुस्कुराहट आ गयी। तभी चाचा मेरे पास से गुजरे और मेरी तरफ देख कर बोले कि ''हर आदमी के पास इतने पैसे नहीं होते कि वो समोसा खरीद सके।'' न जाने उनकी इस बात ने मुझ पर क्या असर डाला कि कई वर्ष बीत जाने के बाद भी मैं इस घटना को भूल नहीं पाया हूँ। मेरी मुस्कुराहट देखकर शायद चाचा को गरीबी में बिताए अपने वो पुराने दिन याद आ गये होंगे जिनका संस्मरण मैं यदा–कदा अपनी माँ के मुख से सुना करता हूँ। आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से सम्पन्न होने के बाद भी यदि कोई व्यक्ति अपने अतीत के प्रति इतना संवेदनशील हो कि वैसी ही स्थिति में रहने वाले लोगों को भावनाओं से अपने आपको वर्तमान में जोड़ सके तो यह इस व्यक्ति की महानता का सूचक है। अपनी इसी भावनात्मक संवदेनशीलता के वशीभूत होकर चाचा न जाने कितने ही लोगों की न जाने कितनी तरह से मदद् करते रहते थे। उनके सामाजिक सरोकार इतने व्यापक थे कि उनके रहते यह लगता था कि कोई भी कार्य असंभव नहीं है। उनकी संवदेनशीलता और उदारता का लाभ परिवार के सदस्यों को तो मिलता ही था, साथ ही साथ वे भी इससे लाभान्वित होते थे जो किसी भी प्रकार उनके संपर्क में आ जाते थे। ऐसे व्यक्ति का हमारे बीच से आकस्मिक रूप से चले जाना परिवार एवं समाज के लिए एक अविस्वसनीय क्षति है। ❑

सम्प्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीतिशास्त्र, गौतम बुद्ध राजकीय डिग्री कॉलेज, फैजाबाद

गुरू का नाज...अनुज से कविराज....

❐ अनुजेन्द्र तिवारी 'अनुज'

''हे! विद्या पुरोधं, शैक्षिक योद्धा, आप पधारे परम धाम।
अर्थशास्त्री विद्धनधानी, शिक्षाविद् सेवा निष्काम।।
स्वच्छ आचरण, स्वतंत्र विचारण, धीरवीर उन्नत ललाम,
अगानित बीज ज्ञान के बोए , जो बन गए बट वृक्ष तमाम।
समवेत् श्रद्धाजंली अर्पित करते, चरणो में समर्पित कोटि प्रणाम।''

हमारी कलम तत्कालिक घटनाओं पर कुछ भी लिखने की गवाही नही देती लेकिन फिर भी.....

वैसे तो हम हमेशा आपके सन्निकट ही रहा करते और आपका गुरुत्व, स्नेह प्यार–दुलार के साथ–साथ डाँट भी आशीर्वाद स्वरूप मिलती रहती, फलतः हम भी दिन–प्रतिदिन समृद्ध होते गए। आप एक दिन मेरी काव्य–साधना को देखकर डॉ0 पी0के0 सिंह के सम्मुख 'कविराज' की उपाधि से नवाजते हुए बोले कि 'प्रो0 एस0पी0 तिवारी' अर्थशास्त्र की पी0 एच0 डी0 तुम्हे पद्य में करवांएगे। समुपस्थित शिक्षकगण हास परिहास करने लगे कि कफर तो वह हिन्दी की हो जाएगी या अर्थशास्त्र की ही रहेगी।

एक बार जब इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मौखिक परीक्षा लेने हेतु उघत हुए तब गुरूमाता के साथ के साथ मुझे भी आपके साथ संगम नगरी में प्रस्थान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक दिवस कालान्तर दिनांक– 17.05.2014 को संगम की अविरल धारा में हम सभी ने डुबकी लगाई, तत्पश्चात हमने पूरे क्रिया–कलाप को कवित्त में पिरो दिया सायंकाल की बेला में जब 'अनुज' कण्ठ से आपको श्रवण कराया तो आहुलारित होकर झूम उठे–

''मातु–पिता'' से बढ़ गुरु, गुरुता लिए,
जिनकी कृपा से कलियुग में हम धन्य हुए।
गुरूमाता का भी सानिध्य मिला खूब,
जिनके आशीर्वाद से ''अनुज'' अनगम्य हुए।।
''मदन'' और 'बिरजू' वहाँ के सौजन्य हुए।
गंगा स्नान पश्चात् सभी नाव पे सवार
''सरिता'' के कर से, गौ के गोरस से,
संगम के तट, भाष्कर को अहर्य हुए।।

नाव पर सवार होकर नल की विविधता औंर तीनो नदियों के मिलने को बहुत समीप से देखने हेतु बढ़े तो–

''प्रभु की थी प्रभुंता, भाव की थी भव्यता''
संगम की दिव्यता, यहां थी छाए हुए।
मानो प्रतीत हो रहा चल रहे क्षीर सागर में,
'केशव' निज 'भार्या' को साथ बैठाए हुए।।
एकल अर्थशास्त्री बने लीला दर्शक,
सर्पराज जैसा, 'शिष्य' फन फैलाए हुए।
नाविक बने पायलट, नीर काटे झटपट।
गंगा मॉ ने नाव पर सेज थे बिछाए हुए।।''

जहाँ एक ओर शिक्षा जगत में रहते हुऐ आपने मुझे अपने साथ अगणित यात्राएँ करवायी तो दूसरी आरे ऑफीशियल काम–काज में भी सिद्धहस्त किया। निश्चित रूप से जिसका प्रत्यक्ष लाभ आज हमें किसी न किसी रूप में प्राप्त होता रहता है।

कमी बस, मात्र रह जाती है। तो आपकी/जो आज सब कुछ छोड़कर पारलौकिक ब्रह्म की गोदी में सुप्तावस्था में है। अपितु हम सभी को नित–प्रति आशीर्वाद दे रहे है। ❑

सम्प्रति : कवि एवं प्रवक्ता, रा0आ0प0इ0का0, फैजाबाद।

स्वर्णिम पन्नों में सदैव अमर रहें

❐ नोमेश कुमार पाण्डेय

डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग के प्रोफेसर एस0पी0 तिवारी अपनी सादगी और अन्तर्मुखी स्वभाव के लिए जाने जाते थे जिनका छात्रों के प्रति अटूट लगाव था। आप हमेशा यही अनुप्रेरणा देते रहे कि इतनी मेहनत करो कि असफलता चाह कर भी सफलता से आगे ना निकल सके। संस्थान के प्रति आपकी सेवा, छात्रों एवं शिक्षकों के प्रति लगाव तथा महान अर्थशास्त्री विचारधारा विश्वविद्यालय के स्वर्णिम पन्नों में सदैव अमर रहे। ❑

जीवन के चन्द लम्हें

(डॉ० एस०पी० तिवारी के चरणों में समर्पित श्रद्धासुमन)

❒ प्रीती त्रिपाठी शुक्ला

सन् 2000 में जब प्रवेश डॉ0राम मनोहर लोहिया, विश्वविद्यालय, फैज़ाबाद में हुआ, तब वहाँ उनके सान्ध्यि में रहकर उनको और करीब से जानने और समझने का सुअवसर मिला। इतने कठोर बनकर उनके डाँट फटकार के पीछे जो स्नेह समझ में आया। मेरे मामा होने के साथ–साथ गुरु रूप में उनसे सीखने समझने का अवसर मिला। कुछ भावनाओं को शव्दों का रूप देना उतना ही मुश्किल है जितना उन्हें आज भूलना। कभी–कभी स्वभाव में बचपना, एक छोटे बच्चें के समान उनकी सरलता और सहजता का प्रतीक था। एक माँ जितना अपने बच्चों का हित सोचती है। मामा बनकर डन्होंने माँ–माँ दो माँओं जितना हित सोचना उनका लाजिमी था। जीवन में उनका सही समय पर प्रोत्साहन देना ही मेरे जीवन को आधार मिल गया। आज जहाँ मैं हूँ उनके प्रेरणा का ही फल है। श्सब पढ़ै, सब बढ़ैश उनका यह सूत्र जीवन का मूलमंत्र है। उनकी डाँट और फटकार में छुपा प्यार समझना मुश्किल होता था लेकिन समझ में आ ही जाता था।

जीवन में उनका कर्ज है जो चुकाना मुमकिन नहीं है। परिवार में उनका रिक्त स्थान कोई नहीं भर सकता। 'बन्दौ गुरु पद पदुम परागा' प्यारे गुरु व मामा जी को इन्हीं चन्द शब्दों में भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित...।

चिट्ठी ना कोई संदेश जाने वो कौन सा देश जहाँ तुम चले गये । ❑

अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि

❒ मधुकर त्रिपाठी

पूज्य मामाजी डा. शारदा प्रसाद तिवारी से एक अटूट रिश्ता है। मुझे उनके साथ कुछ वर्ष रहने का सौभाग्य मिला। इन वर्षों में मैंने उनसे काफी कुछ सीखा। वह मेरे लिए सच्चे शुभ चिंतक और मार्गदर्शक रहे। लक्ष्य निर्धारित करो और उसके पीछे पड़ जाओ, जब तक हासिल न हो और दुनिया में कोई काम असम्भव नहीं है। सादगीपूर्ण, मितव्ययी जीवन उनका मूलमंत्र रहा और मुझे हमेशा इसका अनुकरण करने को कहते रहते। बेटा पढ़, लिख लो फिर जीवन पड़ा है दुनिया के सुख भोगने के लिए। वो हमेशा चरैवेति चरैवेति में विश्वास करते और गतिमान रहते। और बहुत सी बाते हैं उनके साथ गुजारे हुए समय की। मामाजी एक वटवृक्ष थे, जिसकी छाया ने बहुत लोगों का जीवन संवार दिया। मामाजी हमेशा छात्रों की मदद के लिए तैयार रहते। पढ़ाई के लिए प्रेरित करते आज वो हमारे साथ नहीं हैं लेकिन उनकी बातें, मार्गदर्शन हमेशा साथ रहेगा ..... शब्द नहीं हैं अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए ..... आँखें नम हैं मन बेचैन है उन्हें याद करते हुए। ❑

क्या पता था
यह अस्तातल की ओर जाते हुए सूर्य की चमक थी।

❑ डॉ० बृजेन्द्र पाण्डेय

हम लोग उन्हें शारदा भाई साहब कहते थे। अपने तीन भाईयों में वे सबसे अलग– अनोखे थे। बड़े भाई साहब सरल और धीर; मझले भाई साहब, जिनके सानिध्य– सम्पर्क में रहने का सर्वाधिक अवसर मिला और जिन्हें हम लोग आपस में तिवारी जी कहकर सम्बोधित करते थे, सख्त और प्रतिबद्ध; तथा शारदा भाई साहब कई बार बालवत्, कभी ज़िद्दी, तो कभी महात्वाकांक्षी, किन्तु सदैव अल्हड़ और भावनाओं तथा अपनत्व से भरे हुए। बहुआयामिता जिसे कहते हैं, उसके वे साक्षात् देह–विग्रह थे। एक अच्छे और ज़िम्मेदार पिता और पति, एक स्नेहसिक्त चाचा, एक व्यावहारिक रिश्तेदार, एक आत्मीय मित्र, एक उद्यमी शिक्षक, एक निष्ठावान गृहस्थ, एक दूरदर्शी प्रशासक, एक जुझारू नेता, एक लड़ाकू ब्राह्मण और एक अलमस्त इंसान– एक ही आदमी में ये सारे आयाम सहजता से समाहित थे।

मंझले भाई साहब के गोमती नगर स्थित आवास पर प्रायः कुमारस्वामी फाउण्डेशन के अध्ययन समूह 'मेटानोया' की मासिक बैठक के समय उनसे मुलाकात हो जाती थी। हम लोगों को विश्वविद्यालयी दृष्टि से तो अवगत कराते ही थे, हमेशा कुछ ठोस करने की सलाह भी देते थे। फरवरी, 2016 के फाउण्डेशन के वार्शिक व्याख्यान कार्यक्रम में पधारे और फाउण्डेशन की प्रकाशन सम्बन्धी गतिविधियों को देखकर आह्लादित होते हुए बोले कि मैं तो समझता था आप लोग बात ही करते रहते हैं, यहां तो बहुत ठोस काम हो रहा है।

अपने अन्तिम दिनों में वे कुछ रहस्यमय होते जा रहे थे, उनकी अभिरुचियाँ भक्तिमय, निःसंग और निःस्पृह होती जा रही थीं। वे कुछ नज़दीक आता देख रहे थे। अपने अवसान से दो दिन पूर्व अपनी प्रिय अम्बेसडर कार के साथ मैकेनिक के यहां मिल गए। उस दिन कुछ ज़्यादा की सुन्दर लग रहे थे, ऊपर से चटकीली चेक की कमीज़ जो पहने थे; क्या पता था, यह अस्तातल की ओर जाते हुए सूर्य की चमक थी। उन्हें शतशः भावांजलि! ❑

सम्प्रति : एसोसिएट प्रोफेसर राजनीतिशास्त्र, विद्यान्त हिन्दू पी.जी. कॉलेज, लखनऊ

बहुआयामी व्यक्तित्व के आलोक दीप थे प्रो० तिवारी

❑ डॉ० अमितेन्द्र सिंह

गुरु के व्यक्तित्व को कुछ शब्दों में व्यक्त करना स्वयं में एक चुनौती है, और उस गुरु का जो उसका प्रत्येक पग परसाख के रुप में रहा। उनके जीवन और व्यक्तित्व के इतने विविध आयाम हैं, उनकी कर्म–साधना के भिन्न–भिन्न स्तर हैं कि सभी को समग्रता व सहजता से समेटना संभव नहीं। एक सदाशय संरक्षक, संस्कारों के प्रणेता, परंपराओं के पोषक, शिक्षा के उन्नायक और गाँवजनो के प्रतिस्नेह वे इस युग में पुरुषोत्तम राम के पर्याय ही हैं। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के अनेकानेक आलोक दीप अंतर्मानस में झिलमिलाते रहते हैं। उनमें शिष्यों के प्रति जो उदारता, प्रेम और अपनापन था, वैसा किसी गुरु में कम ही देखने को मिलता है। वह शिष्यों को निखरने से नहीं रोकते थे। जो निखरना चाहता था, उसकी पूरी मदद करते थे। आप अपने शिष्यों से ही हमेशा ही जीवित रहेंगे। ❑

सम्प्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर पं0 दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महिला डिग्री कॉलेज, राजाजीपुरम् लखनऊ

राजदीप मैं जा रहा हूँ

❒ राजदीप सिंह

बड़े किस्मत वाले होते हैं वो लोग जिन्हें ऐसे प्रोफेसर मिलते हैं। उनमें से एक मैं भी था। बहुत कम समय में बहुत कुछ सीखने को मिला। पता चला कि ईकोनॉमिक्स असल जिन्दगी में कैसे लगाई जाती है। वो मेरे लिए पिता समान थे। जो मुझे हर छोटी से छोटी बात सीखाते थे, जैसे एक पिता अपने पुत्र को सीखाता है। उनका मुस्कुराता चेहरा आज भी मेरी आँखों के सामने आता रहता है। हमारी असल मुलाकात एक कॉन्फ्रेंस के दौरान हुयी थी जहाँ मैं अपना पहला पेपर पढ़ रहा था। वो बैठकर मुझे सुनते रहे और फिर अचानक से बोले कि मैं इसको मोनटेक सिंह आलुवालिया बनाऊंगा और यह बात वो हर किसी से कहते थे। जिससे मेरा आत्म विश्वास हमेशा बढ़ता था और यही आत्म विश्वास मुझे अपने लक्ष्य के प्रति मजबूत बनाता था। उसके बाद से मैं उनके साथ रहने लगा। मैं उनके चैम्बर में अक्सर जाता रहता था, जहाँ हम हर रोज किसी न किसी सामाजिक मुद्दे पर बहस किया करते थे। मुझे आज भी याद है वो लखनऊ यूनिवर्सिटी की कॉन्फ्रेंस, जब उन्होंने मुझे रात एक बजे तक पेपर समझाया था और इसी में मुझे 'बेस्ट पेपर' का पुरस्कार भी मिला था। इसी तरह मैं उनके पास घण्टो बैठता था जिससे मुझे ईकोनॉमिक्स विषय तथा अन्य चीजों के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिलता था। इसके बाद मैं कुछ समय के लिए दिल्ली शिफ्ट हो गया, जहाँ मैं अपनी आगे की पढ़ाई कर रहा था। मेरी फोन पर उनसे अक्सर बातें हुआ करती थी। इस बीच मैं गुवाहाटी भी गया था और सर तेहवांग बार्डर पर थे तथा लौटते समय वो मुझसे मिलने गुवाहाटी एक लाल बत्ती वाली गाड़ी से आये थे। मुझे उनके चेहरे की मुस्कुराहट तथा खुशी आज भी याद है लेकिन मुझे क्या पता था कि मैं उनका चेहरा आखरी बार देख रहा हूँ। उनका आखरी बार फोन पर कहना 'राजदीप मैं जा रहा हूँ' क्या पता था कि वो हमेशा के लिए जा रहे हैं। आज भी उनकी याद आती है तो आँखे भर आती हैं। किसी ने सही कहा है कि एक शिष्य गुरु बिना अधूरा है। लेकिन मैं उनके बताये हुए पथ पर सदैव चलूंगा। और ईश्वर से मेरी यही कामना है वो जहां भी हों उनका आशीर्वाद सदैव हमपर बना रहे। ❑

क्या पता था वो हमसे इतना ख़फा हो जायेगा

❒ पवन उपाध्याय

भाई हेमंत की वह बात आज भी बार बार याद आती है कि ''चाचा जैसा यायावर जो अक्सर अपने जीते जी मासूम दिक्कतों से खिझा देते थे, जाते जाते इतना ख्याल कर गए हों सबका, मानो कोई दिक्कत न देना चाहते हों किसी को। साथ भी छोड़ा तो बिना भनक के उस घर में, जहाँ वो दिनचर्या में कम मिलते थे।'' वो दिल दहला देते हैं यह कह के कि–''यार सोचो... यह घटना तो कहीं भी हो सकती थी ! ट्रेन में, बस में, सड़क पर या देश के किसी उस कोने में जहाँ परिजनों के समय से पहुँचने की छोड़ो, पहचानने में या खबर आने में दो चार दिन लग सकते थे। चाचा कब कहाँ हैं, कितनों को पता होता था भला?'' मैं समझता हूँ हेमंत भाई के इस बात से उनसे परिचित हर किसी को इत्तेफाक होगा।

उलटी चाल चलते हैं इश्क करने वाले,
आँखें बंद करते हैं दीदार के लिए !

यह इश्क चाहे माशूका से हो या मनुष्यवत किसी महान व्यक्तित्व से, तासीर एक सी ही होती है। उस अमुक के लिए समर्पण, त्याग, व्यस्तता की सघनता के बीच समय देने की उत्कंठा, या ऐसी ही तमाम तवज्जो, जो उस अमुक की हमारे जीवन में महत्व का भान कराती है। आज जब प्रो. शारदा प्रसाद तिवारी जी, जिन्हें हम प्यार और पूरे सम्मान से 'चाचा' कहते थे स्थूल रूप में हमारे बीच नहीं हैं लेकिन कहीं बहुत भीतर बहुत खास सलाहियत से सुरक्षित हैं, हमें संबल दे रहे। हमारे जैसा मूढ़ भी उन पर किताब लिख सकता है, ऐसी तासीर थी उनकी। सुबह जागने से लेकर थक कर चूर हो कर निढाल बिस्तर पर पहुंचना हमारी फितरत है लेकिन इसके बावजूद मंजुला की अंतस की जिजीविषा और लोगों के दिलों में चाचा को कालजयी रखने की चाहत के चलते पिछले दिनों में इस स्मारिका के लिए लोगों की भावनाएँ जिस रूप में सम्मुख आयीं उन्हीं के हवाले से कुछ अभिव्यक्तियाँ हमारे भी दिल में उपजी हैं ! वही साझा करना चाहता हूँ आप से !

मुझे बाल्यकाल से ही अवधूत सरीखे लोग खासे प्रभावित करते रहे हैं, उन्ही लोगों में चाचा भी एक हैं। स्मारिका से ही कुछ उधृत करना चाहता हूँ। उनके दूर दराज के दोस्तों ने उन्हें बार बार उनकी दोस्तों के प्रति उनके महामना होने की पुष्टि की है। प्रो. वेद त्रिपाठी जी के आकस्मिक बुलावे पर जिस तरह चाचा आगरा पहुंचे वह प्रसंग दिल में उतरता है। बेटी निमिषा को स्कूटी से कहीं छोड़ते हैं तो स्कूटी गंतव्य से दूर इस लिए नहीं खड़ी करते कि लोग मजाक करेंगे उनका बल्कि इस लिए कि मजाक बेटी से न करें सहेलियां। क्यों कि दुनिया चाचा का कितना भी मजाक उडाती हो, चाचा कभी दुनिया में नहीं रमे, लेकिन हाँ, लोग

विवश थे कि उनमे रमो। अपनों के सुख–दुःख में संशाधन कभी गरज ही नहीं रहे उनके। लखनऊ तो मानो प्रोफेसर कालोनी से 'देवकाली चौराहा' हो जैसे उनके लिए। कब लखनऊ हैं तो कब फैजाबाद अगर वो न बताते तो सगे भी न जान पाए कभी। परिधान तो कभी मानक ही नहीं रहे उनके लिए। हेमंत और निलय भाई जितना भी खीझे हों जो उन्हें घर में न मिला स्वतः जान जाते चाचा लिए गए होंगे। यह सब मैं समझ सकता हूँ क्यों कि इस प्रवित्ति से वो हर उस अमुक को यह जता जाते कि कितनी अहमियत है तुम सब की हमारे जीवन में जो इस रूप में तुमसे अलग नहीं होना चाहता।

बेटी निमिषा बोलती हैं 'लड्डू' हमारे लिए भी छोड़ देना पापा। ... और वो शायद पहली और आखिरी बार था, उन्हों ने मिठाई छोड़ी होगी।.... शायद इस लिए कि वो बताना ही नहीं चाहते थे कि अब दुनिया छोड़ने वाले हैं... और इस नाते अपनी प्रिय लाडली के लिए अपनी सबसे प्रिय बदनामी छोड़ गए, वो मिठाई, जिसे रात बिरात फ्रिज किचेन में खोजते, खुटुर पुटुर की टुक टुक में, नाती 'रुचिर' के 'टुकटुक नाना' हो गए ! उनकी संवेदना का भान सिर्फ इस बात से लगाइए जब निलय से ढाबे पर एक आदमी की लाचारी पर बरबस कह उठते हैं कि ष्हर आदमी के पास इतने पैसे नहीं होते कि वो समोसा खरीद सके।' शायद चाचा उस राहगीर की उस दारुण दशा के मर्मग्य थे। चाचा अपनी अम्बेसडर कार के लिए मजनू थे। मेरा दावा है अम्बेसडर का निर्माता भी उतनी खूबियाँ नहीं जानता होगा जितने पर चाचा पी–एचडी करा सकते थे। अपने भरोसे के लोग हों या चीजें, उनकी फिक्र, उनकी देखभाल, उनके प्रति समर्पण के लिए अगर शिद्दत का पाठ पढना हो तो उन्हें आत्मसात किये बगैर नहीं सीखा जा सकता। यह थी चाचा की शख्सियत। एक असीम गहराई और अजीम चाहत भरी। जटिल अर्थशास्त्र के निहायत सरल आचार्य। जिनके लिए डॉ नरेन्द्र शंकर कहते हैं 'सपनो के महल के ... साकार स्वरुप में हर जगह... हर समय... जीवित हूँ मैं। 'मैं यकीन से कह सकता हूँ कि काल' की कोई गरज फंसी होगी जरुर कि महाकाल के प्रिय के बगैर न संभव थी और इसी हेतु वह चुपके से चुरा ले गया चाचा को।

भाई हेमंत की वह बात आज भी बार बार याद आती है कि ''चाचा जैसा यायावर जो अक्सर अपने जीते जी मासूम दिक्कतों से खिझा देते थे, जाते जाते इतना ख्याल कर गए हों सबका, मानो कोई दिक्कत न देना चाहते हों किसी को। साथ भी छोड़ा तो बिना भनक के उस घर में, जहाँ वो दिनचर्या में कम मिलते थे।'' वो दिल दहला देते हैं यह कह के कि–''यार सोचो... यह घटना तो कहीं भी हो सकती थी ! ट्रेन में, बस में, सड़क पर या देश के किसी उस कोने में जहाँ परिजनों के समय से पहुँचने की छोड़ो, पहचानने में या खबर आने में दो चार दिन लग सकते थे। चाचा कब कहाँ हैं, कितनों को पता होता था भला?'' मैं समझता हूँ हेमंत भाई के इस बात से उनसे परिचित हर किसी को इत्तेफाक होगा।

बेटी निमिषा बोलती हैं 'लड्डू' हमारे लिए भी छोड़ देना पापा। ... और वो शायद पहली और आखिरी बार था, उन्हों ने मिठाई छोड़ी होगी।.... शायद इस लिए कि वो बताना ही नहीं चाहते थे कि अब दुनिया छोड़ने वाले हैं

मैं निहितार्थ समझ गया अब उनके 'आराम' का, जब उन्हों ने परलोक की अनंत यात्रा पर कूच करने से ठीक पहले श्रेया से कहा था 'अब बहुत थक गए हैं भाग दौड़ के, अब भाग दौड़ नहीं करेंगे ! जो भी मिलेगा सुकून से खायेंगे, आराम से रहेंगे !' किसी से नाराज न होने वाले चाचा की आँखों से वो दो बूँद आँसू उनकी 'सीरत' का 'सिरप' है शायद, जिसे अंतिम श्वास ने हम सब के लिए टपका दिया था उनकी आँखों से, जिसे अब सहेजना है हमें अपनी सेहत के लिए! हम सब अपनी अपनी गलतियां खोजते रहेंगे जीवन भर, क्यों कि चाचा इस कदर खफा नहीं हुए कभी किसी से। रह रह के जहन में यह बात आती है कि ...

रूठ जाना तो मोहब्बत की अलामत है मगर,
क्या पता था वो हमसे इतना खफा हो जायेगा। ❑

Professor Sharda Prasad Tiwari: A Tribute

Professor Tiwari was a very senior member of the Indian Economic Association and use to take a very active part in its activities. It was due to his dynamic personality that he was very close to senior professors and participated with them in intellectual discourse.

Born in a small villege of Sultanpur district in Uttar Pradesh, Professor Sharda Prasad Tiwari got his primary education at his native villege and did his high school from a college situated in the periphery of his villege. He did intermediate from MSV Inter College, Sultanpur. After that he came to Lucknow for his higher studies. Here he came in contact with Late Professor Shailendra Singh a professor of profound scholarship in the department of economics, university of Lucknow. Professor Tiwari had a very high degree of respectability and admiration for Professor Singh. It was at his behest that after getting his masters in economics, Professor Tiwari did his Ph.D at the Giri Institute of Development Studies where his doctoral Supervisor was Dr. R.T. Tewari. His academic affiliations include Kanpur University, University of Lucknow and finally Dr. RML Awadh University, Faizabad. He accomplished various academic and administrative assignments with full sincerity and credibility. He was always a strong votary of autonomy of universities. Infact he had unique wisdom of interpreting university acts and statutes in the interest of university system. His economic ideas were routed in Indian tradition. He was simple in life style but commanded acumen in academic and administrative matters.

Professor Tiwari was a very senior member of the Indian Economic Association and use to take a very active part in its activities. It was due to his dynamic personality that he was very close to senior professors and participated with them in intellectual discourse. Significantly, it was Professor Tiwari who introduced me in the Indian Economic Association. His untimely sad demise has inflicted a great loss, inter alia, to the Indian Economic Association. I firmly believe that Professor Tiwari's inspiring spirit will continue to guide us forever. ❑

Dr. Bharti Pandey,
Executive Committee Member,
Indian Economic Association.

A Tribute to Prof. S.P. Tewari

My heart broke when I lost my best friend Prof. Tewari, as I have traveled a long journey with him. Prof. Tewari is known to me since 1995 as I had joined Avadh University as a Lecturer. I have spent great time with him as we were together in a university residence as sharing basis for approximately a year.

As a human being Prof. Tewari was very nice, humble, adjusting and supportive human being. Initially in the new colony we were only eight occupants and Prof. Tewari was having good relations with everyone. In the colony when any one faces any problem, he was the first person to extend help and comes out of his home even in the midnight.

Most of the time in the morning we took morning tea together and it was a great time for us. Prof. Tewari and my son both were fond of sweets very much and most of the time both used to go together to have sweets.

Prof. Tewari always used to remain busy with his work and was always part of university activities whether academic or non-academic. Though Prof. Tewari is now no more in this physical world but he will remain alive forever. Sometimes II feel he is standing with me and saying Jasu lets have a cup of tea.

We love you Prof. Tewari and you will forever bee in our hearts. May your soul rest in eternal peace. ❑

Prof. Jaswant Singh
Dept. of Environmental Sciences, Dr. RML Avadh University, Faizabad

An Enviable Person

Many thanks for the memories that I have got the opportunity to spent with you, which will never fade

I feel very pained and great loss to write a few words about the sudden demise of ***Late Professor S.P. Tiwari, Department of Economics, Dr. Ram Manohar Lohia, Avadh University, Faizabad.*** I have to say so many things but unable to put into words. I feel that not only mine but you have touched so many lives as a good husband, caring father, friends and so on. You were an incredible educator, an honorable mentor, and a good motivator that only comes along once in a lifetime. Endlessly you were the potential personality that has made the future of several people without any selfishness.

I would like to thanks for gracing my life and thank you for leaving your hand print on my heart. I will never forget you. May God bless you, and may you rest in peace. ❑

Thanking you

Sincerely yours,

Dr Awadhesh Kumar Shukla
Assistant Professor, Department of Botany, K.S. Saket PG College, Ayodhya, Faizabad-224123

Dear Sharda nanu,

While there is nothing I can do to change what actually happened but I can continue to offer you my love and support.I can't imagine what you might be feeling and I would not at all pretend to know the loss that you have experienced.Please know that you are not alone, Iam just a silent phone call away or some hint will be enough for me to feel your presence.If you ever need any support or someone to talk to , don't hesitate to reach out.Moreover I am at loss of words .I know that there is nothing for me to say much that will make your loss easier but know that I am sending you my love and support.I hope you to understand my personal feelings which only you would understand & which I can not put in to words .I have never written something like this ever before so kindly forgive me if this does not come out sounding right.Lastly I would just like to extend my most heartfelt condolences.

(I know your soul is resting in peace). ❑

Utkarsh Mishra

I remember and miss my big brother from all my soul and spirit .I still feel exhausted and drained entirely. I had rare courage to visit my beloved bhabhiji during the entire past one year. Perhaps 2/3 times only. A place no less than a temple of love and affection for me . Now u can understand the sky fall upon me..

I very conciously understand the loss to the family. Sorry. Rather a blow to it. But have a courage to face. It's Vidhata's cruelty untimely avalanched at family.

This gap will never be filled but in his rebirth. I wish almighty to reunite us all with SPT boss in our rebirth but with all of our memories of this life. Kyonki Spt ke bagair mujhe kuchh bhi manjoor nahi.

Manjula , mere ye shabd mere aansuon se sane hain.. Be the power to bear the loss.

I can understand your pain .I repeat -- ur pain. I don't understand whether one year about to pass. I don't find charm in solitude. It's all dark for me . U keep me remembering. At least one of SPT. Sorry. May God make to rest that restless in peace. My love all my love my dear everything!!! ❑

Prof. B.B. Tiwari
Veer Bahadur Singh Purwanchal University, Jaunpur

My Association Prof. Sharda Prasad Tiwari is very old. We were class-mates in Lucknow University in 1978 & 79 when both were pursuing M.A. Economics we finished M.A. in 1980 and then due tro transfer of my father we left Lucknow and hified to Agra. Then I came to Udaipur after my marriage and got appointment as Asst. Prof. in Mohanlal Sukhadia University, Udaippur. In 2002, I was attending IEA confuses at Kolhapur, He was sitting besides me in the technical session. We did not recognize each other, after a little talk, he recognize me and since then we had been in touch. He was a very simple, cooprative, dedicated academician. He could do any ehangs for friends. I observed that he was very supportive to his subbordinate staff and stidentas and very popular arrange them. The news that he left us last year was a shock to me. It is my personal loss. I lost my fast friend and classfellow is an early age. I am always with the family members relatives and friends of Prof. S.P. Tiwari and -pray to God to get his friendship again again. ❑

Prof. Arun Prabha chaudhary
Retd. Prof. & Head Department of Economics
Mohanlal Sukhadia University, Udaippur.